ओ३म्

कृण्वन्तों विश्वमार्यम्

सारे संसार को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओं

आह्वायक

वर्ष - 2018-19	स्मारिका	विक्रम सम्वत् - 2076

सम्पादक :-

आचार्य श्याम देव शास्त्री

चलभाष - 09811064932
09350233885

सम्पादन समिति -

सतीश कामरा

चलभाष - 9810168240

करण सिंह तंवर

चलभाष - 8860703535

प्रेमलता भटनागर

चलभाष - 9953280349

नयनतारा

चलभाष - 9953925134

कार्यालय :-

आर्य समाज मन्दिर

महर्षि दयानन्द सरस्वती मार्ग
जी-ब्लॉक, नारायणा विहार
नई दिल्ली-110028
चलभाष - 9810168240
8860703535

आर्य समाज नारायणा विहार की गतिविधियां

1.	प्रात:कालीन दैनिक यज्ञ	प्रात: 6:30 से 7:30
2.	प्रात:कालीन योग कक्षा	प्रात: 6:15 से 7:30
3.	नि:शुल्क आयुर्वैदिक चिकित्सालय	प्रात: 8:00 से 9:00
4.	नि:शुल्क होम्योपैथिक चिकित्सालय	प्रात: 8:30 से 9:30
5.	फिजियोथिरेपी डाक्टर	प्रात: 10:00 से 1:00
6.	नि:शुल्क महिला सिलाई केन्द्र	प्रात: 10:00 से 12:00
7.	महिलाओं के लिए योग कक्षा	सायं 5:00 से 6:00
8.	रविवारीय यज्ञ व सत्संग	प्रात: 7:00 से 9:00
9.	शुक्रवारीय महिला सत्संग	मध्याह्न 3:30 से 5:30
10.	पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग	सायं 6:30 से 8:00
11.	बच्चों की नि:शुल्क कक्षायें (साईंस, गणित, अंग्रेजी व कम्प्यूटर)	प्रात: 10:00 से 12:00 प्रत्येक रविवार

सम्पादकीय

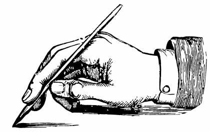

आर्य समाज नारायणा विहार द्वारा प्रकाशित "आह्वायक" का तीसरा अंक आपके हाथों में है। यह एक स्मारिका है जो वर्ष मे केवल एक बार प्रकाशित की जाती हैं। एक संस्था स्मारिका का प्रकाशन करके अपने सदस्यों को उस संस्था द्वारा पिछले एक वर्ष में किए गए क्रिया-कलापों की जानकारी देती है ताकि उससे सम्बंधित सदस्य जान सके की उनकी संस्था ने क्या-क्या कार्य किए है और वे यह भी जान सके की किए गए कार्यो से संस्था के उद्‌देश्यों की कितनी पूर्ति हुई हैं।

इस स्मारिका को प्रकाशित करने के पीछे दो प्रमुख कारण है, प्रथम है-सूचना प्रदान करना अर्थात् सदस्यों को किए गए कार्यो की पूर्ण जानकारी देना और दूसरा है- ज्ञान वर्धन करना अर्थात् लेख, कविता, भजन, गीत, कहानी आदि रचनाओं से सदस्यों के ज्ञान का वर्धन करना। इसके पिछले दोनो अंक सूचना प्रदान करने वाले कम और ज्ञान वर्धन करने वाले ज्यादा रहे हैं। यह अंक पिछले दोनों अंको से भिन्न है। इस अंक में रचनाएं सूचना प्रदान करने वाली अधिक और ज्ञान प्रदान करने वाली कम रखी गई है।

"आह्वायक" के पिछले दोनों अंक अंग्रेजी कलैण्डर के अनुसार प्रकाशित हुए। उन अंकों की समयावधि जनवरी से दिसम्बर तक थी। अतएव पिछले दोनों अंक अप्रैल में हुए वार्षिक उत्सवों पर उपलब्ध हो गए थे। यह अंक देरी से प्राप्त हुआ हैं। इसका कारण इसके प्रकाशन की अवधि का बदल जाना है। चूंकि आर्य समाज का वित्त वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है। अतः इसके प्रकाशन के वर्ष की अवधि भी अब 1 अप्रैल से 31 मार्च तक हो गई है।

वर्तमान प्रबन्ध समिति ने अन्तरंग सभा में इसके प्रकाशन की अवधि वित्त वर्ष की अवधि के समान रखने का प्रस्ताव लाकर यह परिवर्तन करवाया है। इसका कारण आर्य समाज का आय-व्यय तथा उसकी प्रबन्ध समिति का निर्वाचन भी जब वित्त वर्ष के अनुरूप होता है तो स्मारिका का प्रकाशन भी उसी के अनुरूप होना चाहिए।

ऐसा करके प्रबन्ध समिति ने पूरे वित्त वर्ष 2018-19 में जो-जो काम किए उन सबका विवरण इस अंक में शामिल कर लिया है। यदि इसकी अवधि जनवरी से दिसम्बर होती तो केवल दिसम्बर 2018 तक हुए कामों का इसमें उल्लेख हो पाता। तब जनवरी, फरवरी, मार्च 2019 के इन तीन महीनों में सम्पन्न कार्यो का विवरण इसमें कदापि सम्मिलित नहीं हो सकता था।

इन कारणों से स्मारिका का यह अंक आपको विलम्ब से प्राप्त हुआ। अस्तु, यह अंक आपको कैसा लगा? इस सम्बन्ध में आप यदि कोई सुझाव देना चाहते हैं तो स्वागत है। संपादक अथवा सम्पादन समिति के सदस्यों को आप अपने सुझाव भेज सकते हैं। ●

वेदामृतम्

क्रत्वः समह दीनता प्रतीपं जगमा शुचे।
मृला सुक्षत्र मृलय।।

(ऋग्वेद – 7/89/3)

ऋषिः- वशिष्ठः । देवता - वरूणः । छन्दः - आर्षीगायत्री।

शब्दार्थ – (समह) हे तेजोयुक्त! (शुचे) हे दीप्यमान! (दीनता) दीनता, अशक्तता के कारण मैं (क्रत्वः) अपने क्रतु से, संकल्प से, प्रज्ञा से, कर्त्तव्य से (प्रतीपम्) उल्टा (जगम) चला जाता हूँ (सुक्षत्र) हे शक्तिवाले! (मृल) मुझे सुखी कर (मृलय) मुझे सुखी कर।

भावार्थ – हे मेरे तेजस्वी स्वामिन्! मुझ दीन की प्रार्थना सुनो। मैं इतना दीन हूँ, इतना अशक्त हूँ कि अपने कर्त्तव्य के विरूद्ध आचरण कर देता हूँ। मैं जानता हुआ कि यह करना नही चाहिए, फिर भी कर देता हूँ। मैं कई शुभ संकल्प करता हूँ कि आज से नित्य व्यायाम करूँगा, नित्य संध्या करूँगा, पर दीनतावश इन्हें निभा नही सकता।

हृदय में कई अच्छी-अच्छी प्रज्ञाएँ (बुद्धियाँ) स्थान पाती हैं, पर झूठे लोक-लाज के वश में उन पर अमल करना शुरू नहीं करता। उनके विरूद्ध ही चलता जाता हूँ। यह मैं जानता होता कि मेरा "क्रतु" क्या है- कर्त्तव्य कर्म क्या है, अन्दर से दिल कहता जाता है कि तू उलटे मार्ग पर चला जा रहा है, फिर भी मैं दुर्बल किसी भय का मारा हुआ, उसी उलटे मार्ग पर चलता जाता हूँ।

हे दीप्यमान देव! हे मेरे स्वामिन्! तू मुझे वह तेज क्यों नही देता जिससे मैं निर्भय होकर अपने कर्त्तव्य पर डटा रहूँ, किसी के कहने से या हँसी उड़ाने से उलटा आचरण करने को प्रवृत न होऊँ, किसी क्लेश से डरकर अपने "क्रतु" को न छोड़ूँ। मुझे यह अवस्था बड़ी प्रिय लगती है, परन्तु दीनतावश मैं इस अवस्था को प्राप्त नहीं कर रहा हूँ। हे " सुक्षत्र"! हे शुभ बलवाले! मुझे अदीन बना दे। मैं दीनता का मारा हुआ तेरी शरण आया हूँ। इस दीनता के कारण मुझसे सदा उलटे काम होते रहते हैं और मेरा अन्तरात्मा मुझे कोसता रहता है, इसलिए मैं सदा बेचैन रहता हूँ।

हे प्रभु! मुझे सुखी कर। मुझमें तेज देकर मेरी बेचैनी दूर कर। इस अशक्तता के कारण मैं जीवन में पग-पग पर असफल हो रहा हूँ - मेरा जीवन बड़ा निकम्मा हुआ जा रहा है। हे प्रभु! क्या कभी मेरे वे सुख के दिन न आएँगे जब मैं अपने क्रतु पर दृढ़ रहा करूँगा, अपने संकल्पों पर अटल रहा करूँगा? हे मेरे स्वामिन! ऐसी शक्ति देकर अब मुझे सुखी कर दो, मुझे सुखी कर दो। ●

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

पिछले वर्ष सन् 2018 में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेल दिल्ली में रोहिणी स्थित स्वर्ण जयन्ती पार्क में 25 से 28 अक्टूबर तक हुआ। व्यापक स्तर पर आयोजित वह विशाल आयोजन आर्यो का महाकुम्भ था जिसमें भारत के कोने-कोने से आर्य तथा 32 देशों से आर्य प्रतिनिधि पधारे थे। भली प्रकार व्यवस्थित उस भव्य समारोह का दीप शलाका प्रज्जवलित करके उद्घाटन 25 अक्टूबर 2018 को प्रात: 11 बजे भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री राम नाथ कोविन्द जी ने किया। उद्घाटन से पूर्व एक लम्बा शंखनाद हुआ। उसकी ध्वनि तरंगों से जहाँ सबके ह्दयों में सुखद अनुभूति हुई वहाँ सबके अन्दर नव उत्साह और उमंग का संचार हुआ।

माननीय राष्ट्रपति जी के मंच पर आसन ग्रहण करने के बाद गुरूकुल की छात्राओं ने संस्कृत में उनके सम्मान में अभिनन्दन गीत गाया। तत्पश्चात् महासम्मेलन के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्म पाल जी एम.डी.एच ने पुष्पाहार पहनाकर उनका स्वागत किया। श्री विनय आर्य जी ने उनका स्वागत भाषण पढ़ा। उसके बाद राष्ट्रपति जी का उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने महर्षि दयानन्द द्वारा किए गए समाजोत्थान के कार्यो का वर्णन किया और आर्यजनों से उनके कार्यो को आगे बढ़ाने का आवाहन किया।

राष्ट्रपति के उदबोधन के पश्चात् महासम्मेलन के अध्यक्ष श्री सुरेश चन्द्र आर्य, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, का सम्बोधन हुआ। उन्होंने महासम्मेलन की आवश्यकता को बताया और देश-विदेश से वहाँ पहुँचे सभी का स्वागत किया।

उसके बाद मंच पर एक महिला का उदबोधन हुआ। उसका नाम कैथरीन लवराजकुमार था और वह न्यूजीलैंड से आई थी। उसने फर्राटेदार हिन्दी में बोलकर अपना वक्तव्य दिया। उसकी बातों ने मुझे प्रभावित किया। यदि आप भी वहाँ उसकी वेद और दयानन्द की बातों को सुनते तो आप भी प्रभावित हुए बिना नही रहते। खैर, कोई बात नहीं, मैं अगली पंक्तियों में उसकी बातों को उसके ही शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयास करता हूँ।

मैं न्यूजीलेंड में रहती हूँ। वैसे मूलरूप से मैं चीन की रहने वाली हूँ। लगभग 60 वर्ष पूर्व मेरे पिता चीन से आकर न्यूजीलैंड में बस गए थे। न्यूजीलैंड में चीन, भारत, पाकिस्तान, अरब आदि देशों के लोग भी हमारी तरह वहाँ आकर बसे हुए है। हम सब एक बस्ती में रहते है। वहाँ जाकर मेरे पिता ने क्रिश्चन मत अपना लिया। अत: हमारी बस्ती में क्रिश्चन, हिन्दु, मुस्लिम आदि कई धर्मो के लोग रहते हैं। मैं अपने माता-पिता के साथ हर रविवार को चर्च में जाया करती थी।

एक दिन अचानक रात को मेरी माँ मर गई। मैं अपनी माँ से बहुत प्यार करती थी। उस समय मेरी आयु 12 वर्ष की थी। माँ की मौत के बाद मैं बहुत उदास और दुखी रहने लगी। उस समय मृत्यु का रहस्य मेरी समझ से बाहर था। एक रविवार को मैंने चर्च में जाकर पादरी से पूछा-फादर, मेरी माँ क्यों मर गई? पादरी ने उत्तर दिया-तेरी माँ बहुत अच्छी थी। प्रभु यीशु ने उसे अपने पास बुला लिया है।

यह उत्तर सुनकर मैं अपने घर आ गई। परन्तु घर आकर मैं सोचने लगी कि दूसरे बच्चों की माताएं भी तो अच्छी है। प्रभु यीशु ने उनको क्यों

नहीं बुलाया? अगले रविवार को मैने पादरी से फिर पूछा कि मेरी सहेली सोनिया की माँ तो मेरी माँ से भी अच्छी है, उसे यीशु ने क्यों नही बुलाया? पादरी का मुझे फिर वही जवाब मिला। उसके उत्तर से मुझे संतुष्टी नही मिली।

बस्ती में एक मस्जिद भी है। मैंने उसके इमाम से जाकर माँ का अचानक मर जाने का कारण पूछा तो उसने कहाँ कि तेरी माँ कब्र में सोई हुई है, मरी नही है। खुदा कयामत के दिन उसको जिन्दा करेंगा और जन्नत बक्सेगा। मेरी संतुष्टि उसके जवाब से भी नही हुई।

हमारी बस्ती में हिन्दु भी रहते है। उनके सम्पर्क से मैं थोड़ी हिन्दी पढ़ना-लिखना और बोलना सीख गई थी। उन दिनों वहाँ आर्य समाज की स्थापना करने की योजना बन रही थी। अतः वहाँ एक आर्य विद्वान आए हुए थे। मैने अपनी माँ की मृत्यु का कारण उनसे पूछ लिया। उन्होंने मनुष्य के अच्छे-बुरे कर्मो से प्रारब्ध का बनना तथा जाति, आयु, भोग का निश्चित होना बताया। इस बारे में उन्होंने मुझे विस्तार से समझाया और मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर दिया तथा मेरी अन्य जिज्ञासाओं का शमन किया। माँ की मृत्यु का रहस्य मेरी समझ में आ गया और मेरी संतुष्टि हो गई।

फिर तो मैने उनसे मिलकर जड़, जीव, प्रकृति, परमात्मा आदि अनेक विषयों पर चर्चाएं की। उन्होंने मुझे "बाल सत्यार्थप्रकाश" की छोटी पुस्तक पढ़ने को दी। मैंने उसे मन लगाकर पढ़ा। मूल "सत्यार्थप्रकाश" पढने के लिए मैंने हिन्दी भाषा का ज्ञान और प्राप्त किया। महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थप्रकाश पढ़कर मेरा अज्ञान रूपी अन्धकार मिट गया। मेरे हृदय के कपाट खुल गए और मुझे आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति का ज्ञान प्राप्त हो गया। तब से मैं अपने मनुष्य जीवन को सार्थक मानती हूँ। महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा परमात्मा का कोटि-कोटि धन्यवाद करती हूँ कि मुझे सत्य ज्ञान प्राप्त हुआ।

न्यूजीलैंड निवासी सुश्री लवराजकुमार ने भारत के लोगों को सम्बोधित करते हुए कहा-आप कितने भाग्यशाली है कि आपने ऋषि-मुनियों के देश में जन्म लिया। इस धरा पर स्वामी दयानन्द जैसे ऋषियों ने वेद ज्ञान की ज्योति जलाई। आपकी अपनी भाषा हिन्दी में जो भारत की राष्ट्रभाषा भी है, उसमें सत्यार्थप्रकाश जैसे अमूल्य ग्रन्थ की रचना की ताकि आपका अज्ञान समाप्त हो सके। सत्यार्थप्रकाश न तो मेरी भाषा में रचा गया और न मेरे देश में। उसको पढ़ने के लिए मैने हिन्दी सीखी और वैदिक विद्वानों का संग किया। तब जाकर वह मुझे प्राप्त हुआ है। मैं ऋषि-मुनियों के देश भारत की इस पुण्य भूमि के दर्शन करना चाहती थी। वर्षो पुरानी मेरी यह अभिलाषा आज पूरी हुई है। इस माटी को छूकर मेरा जीवन धन्य हो गया। वेद ज्ञान के प्रकाश-पुंज ऋषि दयानन्द सरस्वती की इस पावन धरती को मैं नमन करती हूँ, नमन करती हूँ, नमन करती हूँ......। ये उदगार थे उस विदेशी महिला न्यूजीलैंड की कैथरीन लवराजकुमार के हमारे देश भारत और ऋषि दयानन्द के प्रति।

महासम्मेलन के मुख्य पंडाल में सुबह से रात तक कार्यक्रम लगातार चले जैसे कवि सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, अन्धविश्वास निर्मूलन सम्मेलन आदि। छोटे पंडालों में शंका समाधान, विदेशी, सांस्कृतिक, परिचर्चा गोष्ठी आदि में पूरे दिन कार्यक्रम होते रहे। विद्युत, मंच, जल, सफाई, भोजन आदि की सारी व्यवस्थाएं भी सुचारू रूप से चली। इस बार दो यज्ञशालाएं निर्मित की गई थी। एक बडी व दूसरी छोटी। बड़ी यज्ञशाला में प्रातःकाल और सायंकाल केवल दो समय ही यज्ञ सम्पन्न होता था। छोटी यज्ञशाला में सुबह से शाम तक सारे दिन यज्ञ होता था।

तीसरे दिन शनिवार 27-10-18 को शाम को आर्य वीर दल तथा आर्य वीरांगना दल का संयुक्त प्रदर्शन हुआ जिसको देखकर बच्चों को दिए प्रशिक्षण की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की। उसके बाद रात्रि को उसी मैदान में हुए लेजर शो की भी सभी ने सराहना की।

महासम्मेलन में डा. देवव्रत, राज्यपाल हिमाचल प्रदेश, श्री गंगा प्रसाद, राज्यपाल सिक्किम, प्रो. जगदीश मुखी, राज्यपाल आसाम तथा डा. सतपाल सिँह, मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री भारत सरकार, चारों दिन उपस्थित रहे।

दूसरे दिन उत्तर प्रदेश राज्य के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ का आगमन व उदबोधन हुआ। उसी दिन हरियाणा के मुख्य मंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर भी आए। स्वामी रामदेव ने पतंजलि की तरफ से पहले दिन से निशुल्क पानी की बोतल, दूसरे दिन से छाछ, तीसरे और चौथे दिन दूध जलेबी मुफ्त वितरित करवाई।

चौथे दिन रविवार 28 अक्टूबर 2018 को भारत सरकार के गृह मंत्री श्री राजनाथ सिँह द्वारा महासम्मेलन का समापन हुआ। उनके स्वागत में अफ्रीका की बच्चियों ने गाायत्री मंत्र पहले संस्कृत में सुनाया। फिर उसको हिन्दी में गाकर सुनाया और फिर उसको अपनी भाषा में गाया। उनका वह कार्यक्रम देखकर गृहमंत्री जी काफी मुग्ध हुए और उन बच्चियों के साथ फोटो खिचवाएं। अपने समापन भाषण में उन्होंने आर्य समाज को भारतीय संस्कृति का संवाहक बताया। उन्होंने कहा कि यह आर्य समाज ही है जिसने भारतीय संस्कृति को सात समुन्द्र पार पहुँचा दिया है।

महासम्मेलन की प्रत्येक बात को यदि लिखा जाए तो कई सौ पृष्ठों की एक मोटी पुस्तक बन जाएगी। चूँकि मैं महासम्मेलन की व्यवस्था से जुड़ा हुआ था और एक सप्ताह पहले से रोज वहाँ जाया करता था अतः मैं इतना ही कह सकता हूँ कि ऐसा महासम्मेलन मैंने पहले नहीं देखा। इससे पूर्व मैंने उसी पार्क में 2006 और 2012 के महासम्मेलन भी देखे लेकिन इतनी बड़ी संख्या में आर्यों को नही देखा और प्रत्येक आर्य को इतना उत्साहित भी नही देखा। वस्तुतः यह महासम्मेलन सुन्दर, स्वच्छ, भव्य, विशाल, सुव्यवस्थित और सब सुविधाओं से परिपूर्ण था।

आर्य महासम्मेलन में एक तरफ जहाँ बड़ी संख्या में संन्यासी वृंद, वैदिक विद्वान तथा भजनोपदेशक सम्मिलित हुए दूसरी तरफ वहाँ एक बड़ी संख्या में राजनैतिक तथा गैर राजनैतिक प्रमुख व्यक्ति भी सम्मिलित हुए। उनकी संख्या को देखकर महासम्मेलन की विशालता को बखूबी समझा जा सकता है। स्थानाभाव के कारण यहाँ सभी के नाम लिखना सम्भव नही है अतः यहाँ मैं राजनैतिक प्रमुख व्यक्तियों के नाम ही लिखता हूँ।

डा. हर्ष वर्धन, केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री, श्री नितिन गड़करी, केन्द्रीय परिवहन मंत्री, श्री विजय गोयल, केन्द्रीय मंत्री, श्री सुदर्शन भगत, केन्द्रीय राज्य मंत्री, श्री मनीष सिसोदिया, उप मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार, कैप्टन अभिमन्यु, मंत्री हरियाणा सरकार, श्री विजेन्द्र गुप्ता, नेता प्रतिपक्ष दिल्ली विधान सभा, श्री बृजेश रावत, विधायक देवबन्द यू.पी. श्री सुभाष आर्य, पूर्व महापौर दिल्ली, डा. रमाकान्त गोस्वामी, पूर्व मंत्री दिल्ली सरकार, श्री सुधांशु त्रिवेदी, भाजपा प्रवक्ता। सांसद स्वामी सुमेधा नन्द सरस्वती, सुश्री मीनाक्षी लेखी, श्री मनोज तिवारी, साध्वी प्राची, श्री महेश गिरी, डा. रासा सिँह रावत (पूर्व सांसद)।

महासम्मेलन में आर्य समाज नारायणा विहार का योगदानः

1. महासम्मेलन के दूसरे दिन 26 अक्टूबर को आर्य समाज नारायणा विहार से एक बस भरकर महासम्मेलन में गई और रात 8 बजे लौटी।
2. 26 अक्टूबर को शाम को महासम्मेलन के मैदान में दस हजार याज्ञिकों का सामूहिक यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमे हमारे समाज के तीन सदस्यों श्री रविन्द्र गर्ग, श्री विजय कुमार अब्बी तथा श्री चन्द्र शेखर सन्दूजा ने भाग लिया।
3. हमारे समाज के दो सदस्य, मंत्री श्री करण सिँह तँवर (लेखक) तथा श्री चन्द्रभान चौहान महासम्मेलन की सफाई समिति के सदस्य थे अतः उन दोनों ने महासम्मेलन में सफाई की व्यवस्था में योगदान दिया।
4. हमारे समाज के पुरोहित आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी ने महासम्मेलन के पुस्तक बाज़ार में अपनी पुस्तकों की बिक्री हेतु दुकान लगाई और वे स्वयं परिवार सहित अधिकांश समय वहीं रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 में एकत्र किया गया दान व दान दाताओं की सूची-

1.	सर्व श्री राम गोपाल भटनागर	A-89A/1	नारायणा विहार	21,000/-
2.	डा. सुदर्शन कुमार रहेजा	B-21	नारायणा विहार	21,000/-
3.	करण सिहँ तँवर	CB-81	नारायणा	21,000/-
4.	सुश्री शशि तँवर	CB-81	नारायणा	21,000/-
5.	श्याम सुन्दर लाल गुप्ता	C-51	नारायणा विहार	11,000/-
6.	रणवीर सिहँ	G-79	नारायणा विहार	11,000/-
7.	सतीश कुमार कामरा	G-47	नारायणा विहार	11,000/-
8.	प्रवीन दीपक ओबराय	C-86	नारायणा विहार	11,000/-
9.	मनोहर लाल	D-77	नारायणा विहार	51,00/-
10.	रविन्द्र गर्ग	F-83	नारायणा विहार	51,00/-
11.	मोहन तँवर	CB-34	नारायणा	51,00/-
12.	श्रीमती सुप्रिया शर्मा	G-150	नारायणा विहार	5,000/-
13.	दर्शन लाल कत्याल	F-17	नारायणा विहार	2,100/-
14.	चीनू ट्रेडिंग क.	CB-81	नारायणा	1,100/-
15.	मयूर प्रिंटर्स एन्ड पैकर्स	CB-81	नारायणा	1,100/-
16.	चन्द्रभान चौहान	WZ-741	नारायणा	1,100/-
17.	नरेश कुमार	CB-85	नारायणा	1,100/-
18.	वसन्त वीजन	CB-81	नारायणा	501/-

19.	राकेश कपूर	CB-83	नारायणा	500/–
20.	किशन पाल	CB-81	नारायणा	500/–
21.	राम दास	CB-81	नारायणा	200/–
22.	श्रीमती सन्तोष वधवा	E-181	नारायणा विहार	100/–
23.	मंगल	CB-81	नारायणा	100/–
24.	घूरन	CB-81	नारायणा	100/–

कुल राशि 1, 56, 801 रू.

तिरंगा यात्रा

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

जम्मू और कश्मीर राज्य के पुलवामा में 14 फरवरी 2019 को तड़के सी.आर.पी.एफ. के काफिले पर पाकिस्तान परस्त आतंकवादियों ने एक कार में जबरदस्त विस्फोट करके जो कायराना हरकत की थी और जिसमें हमारे 40 बहादुर जवानों का बलिदान हो गया था, उस घटना ने देश के लोगों को झकझोर कर रख दिया था। देश के लोग एक तरफ अपने वीर सैनिकों के बलिदान से दुखी थे तो दूसरी तरफ वे पाकिसतान व उसके द्वारा पालित आतंकवादियों के प्रति आक्रोश से भरे हुए थे। उन दिनों देश की जनता में राष्ट्र प्रेम अपने चरम पर था।

लोगों में राष्ट्र प्रेम की भावना को और पुष्ट करने के लिए आर्य समाज नारायणा विहार ने 17 फरवरी को प्रातः रविवारीय सत्संग के पश्चात नारायणा विहार में एक तिंरगा यात्रा निकाली। उस यात्रा में प्रारम्भ में आर्य समाज के सदस्य व बच्चे सम्मिलित हुए। बाद में रास्ते में जो भी मिला वह यात्रा में सम्मिलित होता चला गया।

यह तिरंगा यात्रा जी–ब्लाक स्थित आर्य समाज मंदिर से चलकर, सनातन धर्म मंदिर (सामने एफ–ब्लाक) उसके बाद गुरूद्वारा (सामने डी–ब्लाक) और फिर बी–ब्लाक तथा ए–ब्लाक से ई–ब्लाक होते हुए वापिस आर्य समाज मंदिर में समाप्त हुई। वहाँ नाशते का प्रबन्ध था। अतः नाशता करने के बाद लोग अपने–अपने घरों को गए।

तिरंगा यात्रा में लोग हाथों में भारत का राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहराते हुए और भारत माता की जय, वंदे–मातरम, हमारे जवान–अमर रहे, पुलवामा के शहीद–अमर रहे, पाकिस्तान मुर्दाबाद आदि नारे लगाते हुए चले। उस तिरंगाा यात्रा में स्त्री, पुरूष, जवान, बच्चे, बूढ़े सभी सम्मिलित हुए। उनके राष्ट्र प्रेम और जोश को उस दिन जिसने भी देखा, वह भी राष्ट्र प्रेम और जोश से भर गया। ●

वर्तमान प्रबन्ध समिति की वार्षिक रिपोर्ट

आदरणीय आर्य बन्धुओं,

आर्य समाज नारायणा विहार की वर्तमान प्रबन्ध समिति का निर्वाचन 31 दिसम्बर 2017 को आहूत की गई साधारण सभा की बैठक में हुआ था। तब से लेकर यह समिति आर्य समाज के कार्यो की देखभाल एवं प्रबन्धन कर रही है। यहाँ प्रस्तुत है एक जनवरी 2018 से लेकर 31 मार्च 2019 तक के काल खण्ड में किए गए कार्यो की रिपोर्ट–

यज्ञकार्य : वैदिक धर्म अथवा आर्य समाज में यज्ञ का विशेष महत्व है। आर्य समाज की यज्ञशाला में प्रतिदिन प्रातःकाल यज्ञ होता है। वार्षिक उत्सव, श्रावणी सप्ताह, शारदीय नवरात्रों में पार्को में सामूहिक यज्ञ किए गए। यज्ञ में आम की समिधा, बढ़िया सामग्री तथा घी का प्रयोग किया गया।

हवन सामग्री की गुणवत्ता और बढ़ाने के लिए हमने उसमें जौ, तिल, चावल, बूरा, घी, का अतिरिक्त सम्मिश्रण किया। ऐसी उत्तम सामग्री व समिधा के प्रयोग से इस दौरान हवन कुण्ड़ की अग्नि न तो बुझ पाई और न धुआं दिया। परिणाम स्वरूप कालोनी वासियों को घोर प्रदूषित वातावरण में शुद्ध वायु का सेवन करने को मिला।

रविवारीय सत्संग : रविवार के सत्संग के लिए हमने सदैव उच्चकोटि के वैदिक विद्वानों को प्रवचन हेतु बुलाने का प्रयास किया। सदस्यों ने सत्संग में उपस्थित होकर उनके प्रवचनों का लाभ उठाया। प्रत्येक रविवार को नया यज्ञमान बनाने की कोशिश हुई। अधिकांश सदस्यों ने अपना जन्म दिन तथा विवाह दिवस यज्ञमान बनकर मनाया और स्वयं प्रसाद भी बाँटा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म दिवस : आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का 194 वां जन्म दिवस 10 फरवरी 2018 को मनाया गया। उस उपलक्ष्य में 8, 9 व 10 फरवरी को तीन दिन प्रभात फेरी निकाली गई। प्रतिदिन प्रभात फेरी प्रातःकाल आर्य समाज से प्रारम्भ हुई और 8 फरवरी को बी–21, 9 को जी–47 तथा 10 फरवरी को सी–51 में यज्ञोपरान्त समाप्त हुई। लगभग सभी सदस्यों ने प्रभात फेरी का अपने द्वार पर पुष्प वर्षा करके स्वागत किया और प्रसाद बाँटा।

इसी प्रकार इस वर्ष महर्षि जी का 195 वां जन्म दिवस एक मार्च 2019 को मनाया गया। पूर्व की भाँति इस वर्ष भी तीन दिवसीय प्रभात फेरी 27, 28 फरवरी व एक मार्च को निकाली गई। आर्य समाज से प्रारम्भ होकर प्रभात फेरी प्रथम दिन जी–47 में, 28 फरवरी को बी–21 में तथा एक मार्च को सी–51 में हवन करके समाप्त हुई। सभी सदस्यों ने प्रभात फेरी का अपने द्वार पर पुष्प वर्षा करके स्वागत किया और प्रसाद बाँटा।

वार्षिक उत्सव : आर्य समाज का 47 वां वार्षिक उत्सव 16 अप्रैल से 22 अप्रैल 2018 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। उसमें वैदिक प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक के प्रवचन तथा श्रीमती सुदेश आर्या के मधुर भजन हुए। उस वार्षिक उत्सव में पूरे छह दिन बदल–बदल कर शाम को विशेष प्रसाद बाँटा गया।

श्रावणी सप्ताहः श्रावणी सप्ताह 10 सितम्बर से 16 सितम्बर 2018 तक बडे हर्षोल्लास से मनाया गया। उसमें वैदिक विद्वान श्री चन्द्रशेखर शास्त्री के

प्रवचन तथा श्रीमती धर्म रक्षिता शास्त्री के भजन हुए।

पार्कों का सामूहिक हवन : शारदीय नवरात्रों में कालोनी के हर ब्लाक के पार्क में 10 अक्टूबर से 18 अक्टूबर तक सामूहिक हवन हुए। प्रत्येक ब्लाक के सदस्यों ने उसमें अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। दशहरे के दिन 19 अक्टूबर को "स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका" (आर्य समाज के सामने) में कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभायात्रा : पिछले वर्षो की भाँति 25 दिसम्बर 2018 को आर्य समाज के सदस्य एक बस में बैठकर स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभायात्रा में नया बाजार पहुँचकर सम्मिलित हुए और रामलीला मैदान की सभा के समापन के बाद शाम को 4 बजे लौटे।

आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह : एक मार्च 2018 को दिल्ली आर्य प्रतिदिन सभा ने दिल्ली की सभी आर्य समाजों का "आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह" रघुमल आर्य स्कूल राजा बाजार, कनाँट प्लेस मे आयेजित किया। हमारे समाज के अनेक सदस्यों ने उसमें भाग लिया। दो मार्च को हमने अपने आर्य समाज में होली का कार्यक्रम आयोजित किया।

पिछले वर्ष की भाँति इस वर्ष भी 20 मार्च 2019 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने "आर्य परिवार होली मंगल मिलन समारोह" रघुमल आर्य स्कूल राजा बाजार में आयोजित किया। उसमें भी हमारे सदस्य शामिल हुए।

इस वर्ष हमने अपने आर्य समाज में 21 मार्च 2019 को दैनिक यज्ञ के उपरान्त होली का त्यौहार मनाया। प्रात:काल साढ़े सात बजे से साढ़े नौ बजे तक चले दो घंटे के कार्यक्रम में सदस्यों ने गीत, भजन, कविता, चुटकले सुनाकर मनोरजंन किया। उसके बाद एक दुसरे पर पुष्प वर्षा करके व चन्दन का टीका लगाकर तथा परस्पर गले मिलकर होली मनाई। मंच से होली का प्रसिद्ध गीत बजाया गया। अन्त में सबने मिलकर प्रसाद खाया।

अन्तरंग सभा की बैठक : सभी सम्बंधित विषयों पर विचार-विमर्श करने के लिए आर्य समाज की अनतरंग सभा की बैठके निम्न तिथियों को आहूत की गई।

1. 21-1-2018	**2.** 25-3-2018
3. 20-5-2018	**4.** 30-9-2018
5. 16-12-2018	**6.** 24-02-2019

विशेष कार्यो का विवरण :

वर्तमान प्रबन्ध समिति ने एक जनवरी 2018 से 31 मार्च 2019 तक के कार्यकाल में कई ऐसे कार्य किए जो पहले नही हुए थे। अब मैं उनका उल्लेख करता हूँ-

1. ऋषि के जन्म दिवस पर भण्डारा : पिछले वर्ष महर्षि का 194 वां जन्म दिन 10 फरवरी 2018 को था। उनके जन्म दिन के उपलक्ष्य में रविवार 11 फरवरी 2018 को आर्य समाज के बाहर भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें हलवा, साग, पूडी का प्रसाद वितरित किया गया। इसी प्रकार इस वर्ष महर्षि का 195 वां जन्म दिवस एक मार्च 2019 को था। अत: उनके जन्म दिवस के उपलक्ष्य में रविवार 3 मार्च 2019 को भी आर्य समाज के बाहर भण्डारा किया गया जिसमें हलवा, साग, पूडी का प्रसाद बाँटा गया।

2. गुरूकुल मंझावली का वार्षिक उत्सव : फरीदाबाद स्थित गुरूकुल मंझावली के वार्षिक उत्सव का समापन समारोह एक अप्रैल 2018 को था। उनके निमंत्रण पर हमारे आर्य समाज से एक

बस भरकर उस दिन उनके कार्यक्रम में भाग लेने पहुँचीं। सदस्यों ने धन एकत्र करके आर्य समाज के नाम से वहाँ दान भी दिया। शाम को बस द्वारा सब सदस्य लौट आएं।

3. स्वामी दीक्षानन्द जयन्ती समारोह : पिछले वर्ष स्वामी दीक्षा नन्द सरस्वती जी की जयन्ती 7 जून 2018 को मावलंकर हाल में एक बड़े समारोह के रूप में भव्य तरीके से मनाई गई। हमारे आर्य समाज के अनेक सदस्य उस कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

4. वृक्षारोपण एवं तुलसी वितरण कार्यक्रम : रविवार 22 जुलाई 2018 को स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका में वृक्षारोपण एवं तुलसी पौधा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में भारत विकास परिषद नारायणा विहार तथा जी-ब्लाक आर.डब्लू.ए. ने भी भाग लिया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय पार्षद श्री छैल बिहारी गोस्वामी तथा पूर्व विधायक श्री आर.पी.सिंह भी पधारे।

5. गुरूकुल देहरादून का वार्षिक उत्सव : पिछले वर्ष मई 2018 में गुरूकुल दून वाटिका पौंधा देहरादून उत्तराखण्ड का वार्षिक उत्सव हुआ। हमारे समाज की कुछ महिला सदस्यों ने उसमें भाग लिया जिनमें स्त्री आर्य समाज की कोषाध्यक्षा श्रीमती परमजीत कौर मुख्य थी।

6. अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन : 25 से 28 अक्तूबर 2018 को दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में हमारे समाज ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज नारायणा विहार के सदस्यों ने महासम्मेलन हेतु 1,56,801 रूपये की दानराशि भेंट की। महासम्मेलन के दूसरे दिन 26 अक्तूबर को आर्य समाज के सदस्य एक बस द्वारा सम्मेलन में पहुंचे और रात्रि को लौटे। उस दिन सायंकाल में हुए 10,000 याज्ञिकों के महायज्ञ में हमारे समाज के तीन सदस्यों श्री रविन्द्र गर्ग, श्री विजय अब्बी तथा श्री चन्द्रशेखर सन्दूजा ने भाग लिया।

7. कम्प्यूटर कक्ष की स्थापना : आर्य समाज में शिक्षा ग्रहण करने वाले बच्चों को कम्प्यूटर की शिक्षा देने के लिए कम्प्यूटर कक्ष की स्थापना की गई। नारायणा विहार डी-ब्लाक निवासी जाने-माने समाज सेवी श्री रमेश गुप्ता जी ने अपने पिता स्वर्गीय श्री मुंशीराम गुप्ता तथा माता श्रीमती चमेली देवी गुप्ता की पुण्य स्मृति में चार कम्प्यूटर प्रदान किए। रविवार, 18 नवम्बर 2018 को वैदिक मंत्रोचार के साथ श्री रमेश गुप्ता जी ने कम्प्यूटर कक्ष का उदघाटन करके चारों कम्प्यूटर आर्य समाज को समर्पित किए। इसके लिए हम श्री रमेश गुप्ता जी का हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

8. भजन संध्या व कम्बल वितरण कार्यक्रमः स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में रविवार 23-12-2018 को प्रात:कालीन सत्संग के पश्चात् गरीब बच्चों को 100 कम्बल वितरित किए गए। उसी दिन शाम को 5 से 7:30 बजे तक भजन संध्या का आयोजन हुआ। उसके बाद सबने मिलकर प्रसाद (भोजन) ग्रहण किया।

9. फिजोथिरेपी केन्द्र का प्रारम्भ : सदस्यों की मांग पर 27 जनवरी 2019 से आर्य समाज में फिजोथिरेपी केन्द्र का शुभारम्भ हुआ। आर्य समाज के पुरोहित आचार्य श्याम देव शास्त्री जी ने दीप प्रज्जवलित करके तथा वैदिक मंत्रोचार के द्वारा उसका उद्घाटन किया। उसका संचालन सुयोग्य डाक्टर श्री प्रमोद कुमार कर रहे हैं। वे गर्दन, कमर, घुटने, ऐड़ी के दर्द, मासं-पेशियों में खिचाव, लकवा आदि अनेक रोगों के विशेषज्ञ हैं।

केन्द्र का समय प्रात: 10 बजे से 1 बजे दोपहर तक है। केन्द्र का संचालन आर्य समाज के प्रथम तल

पर किया जाता है। प्रथम तल पर 7 बैड़ है और एक बैड़ भूतल पर उन मरीजों के लिए है जो ऊपर नही चढ़ सकते हैं। इस केन्द्र में अल्ट्रासोनिक मशीने, आई एफ टी, लेजर, वजन घटाने के लिए बॉडी सलीमर आदि सभी अत्याधुनिक मशीने हैं। जो मरीज केन्द्र में आने में असमर्थ हैं, डा० प्रमोद कुमार उनका इलाज उनके घर जाकर भी करते हैं। केन्द्र में आकर इलाज करवाने की फीस एक सौ या अधिक रूपये हैं।

10. तिरंगा यात्रा का आयोजन : रविवार 17 फरवरी 2019 को आर्य समाज ने नारायणा विहार में तिरंगा यात्रा निकाली। वह यात्रा सी आर पी एफ के उन 40 जवानों के बलिदान के प्रतिकार में रोष प्रकट करने के लिए निकाली थी जिनके काफिले पर आतंकवादियों ने 14 फरवरी 2019 को प्रातः श्रीनगर में विस्फोट करके मार दिया था। आर्य समाज से 9:30 बजे प्रातः प्रारम्भ हुई तिरंगा यात्रा सनातन धर्म मंदिर, गुरूद्वारा से होती हुई बी-ब्लॉक व ए- ब्लॉक से चलकर ई-ब्लॉक होती हुई वापिस जी-ब्लॉक आर्य समाज मंदिर में समाप्त हुई। समापन स्थल पर सबने जलपान किया। लोगों में जोश भरने व राष्ट्र प्रेम जगाने के लिए वह तिरंगा यात्रा आयोजित की गई थी।

11. महाशय धर्मपाल का जन्म दिन समारोह : भारत सरकार ने इस वर्ष एम.डी.एच के मालिक व आर्य समाज के भामाशाह महाशय धर्मपाल जी को पद्म भूषण पदक से अलंकृत किया। अतःएव इस वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने 26 मार्च 2019 को तालकटोरा इनडोर स्टेडियम में उनका विशाल एवं भव्य रूप से 96 वां जन्मदिवस समारोह आयोजित किया। हमारे आर्य समाज के अनेक सदस्यों ने उसमें भाग लिया।

यह है पिछले सवा साल में किए गए कार्यो का विवरण। ये सब काम आपके तन,मन व धन के सहयोग से ही सम्पन्न किए जा सके हैं। आप सब सदसयों का सहयोग हमें निरनतर मिला है। इसके लिए मैं आर्य समाज की तरफ से आपका आभार व धन्यवाद व्यक्त करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी आपका सहयोग हमें इसी प्रकार मिलता रहेगा।

–करण सिंह तंवर

मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

सफर बिना खर्च का

ऊषा खुराना, आर्य समाज नारायणा विहार

एक दिन हम सबने एक ऐसे सफ़र पर जाना है जिसमे कोई खर्चा नहीं।
सीट भी कन्फर्म हैं। फलाईट ओन टाईम हैं।
हमारे सभी अच्छे कर्म हमारा सामान होंगे।
हमारी इन्सानियत हमारा पासपोर्ट होगा। प्यार हमारा वीज़ा होगा।
इसीलिये स्वर्ग तक की इस उड़ान में बिज़नेस क्लास में बैठने
के लिए जिन्दगी में जितना भी हो सके अच्छे कार्य करें।

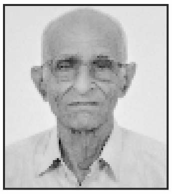

समित्पाणी श्री ज्ञान चन्द भूटानी

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आर्य समाज नारायणा विहार में दैनिक यज्ञ प्रात: 6:30 से 7:30 बजे तक तथा रविवार को 7 बजे से 8 बजे तक होता है। यज्ञ में प्राय: आम की समिधाएं (लकड़ियां) प्रयोग होती है। आपने यज्ञवेदी पर मुट्ठी भर छोटी-छोटी समिधाएं रखी अवश्य देखी होंगी। वे विशेष समिधाएं गिलोय की होती है और उनको श्री ज्ञान चन्द भूटानी प्रतिदिन लाया करते हैं। वे ऐसा पिछले 5 वर्षो से कर रहे हैं।

हुआ यूँ कि एक दिन किसी समाचार पत्र में उन्होंने गिलोय के औषधीय गुणों को पढ़ा। उन्हें अच्छा लगा और तब से उन्होंने हवन के लिए गिलोय की समिधाएं लाना शुरू कर दिया। उसके बाद से वे सदैव गिलोय की तलाश में रहते है। उन्हें जहाँ भी गिलोय मिलती है,उसे घर ले आते है। घर लाकर वे उसको छोटे-छोटे टुकडों में काट कर सुखा लेते हैं और फिर प्रतिदिन हवन के लिए एक मुट्ठी समिधा लेकर आते हैं। शास्त्रों के अनुसार जो शिष्य गुरू के यज्ञ हेतु समिधा लेकर जाता है, उसे समित्पाणी कहा जाता है। अतएव श्री ज्ञान चन्द भूटानी आर्य समाज के दैनिक यज्ञ के समित्पाणी हुए।

श्री ज्ञान चन्द भूटानी आर्य समाज नारायणा विहार के एक वरिष्ट सदस्य हैं। आर्य समाज के पड़ौस में रहने के बावजूद पहले वे दैनिक यज्ञ में सम्मिलित नही हुआ करते थे। तब की उन्होंने एक बात बताई। उनकी बाई तरफ पसलियों के नीचे पेट में दर्द रहने लगा। उसका इलाज उन्होंने कई डाक्टरों से करवाया। इलाज भी कई साल चला परन्तु पेट का दर्द ठीक नही हुआ। उन्होंने फिर प्रात: दैनिक यज्ञ में आना प्रारम्भ किया। यहाँ आकर वे प्रतिदिन स्तुति प्रार्थना उपासना मंत्रों के पाठ के साथ यज्ञ के मंत्रों का पाठ करते और श्रद्धापूर्वक आहूति देते। कुछ समय बाद धीरे-धीरे पेट का दर्द अपने आप ठीक हो गया। इससे यज्ञ के प्रति उनकी श्रद्धा और बढ़ गई।

84 वर्षीय भूटानी जी का जन्म 25 मई 1935 को पिता श्री गुलाब राम व माता श्रीमती सवी बाई के घर में गाँव कादिरपुरां मुलतान (अब पाकिस्तान) में हुआ। देश विभाजन के बाद वे हिसार में रहे। उन्होंने दयानन्द कालेज हिसार से बी.ए., बी.एड. किया। सन् 1958 में उन्होंने श्रीमती कैलाश कुमारी से विवाह किया। उनके दो पुत्र व एक पुत्री हुई।

भूटानी जी को सन् 1964 में दिल्ली नगर निगम के शिक्षा विभाग में नौकरी मिली। उनकी प्रथम नियुक्ति नज़फगढ़ के पास दिचाऊं कलां गाँव की प्राथमिक पाठशाला में शिक्षक के पद पर हुई। एक वर्ष बाद स्थानांतरण स्वत: मिडिल स्कूल में हो गया। कुछ वर्ष वहाँ अध्यापन कार्य करने के बाद वे दिल्ली प्रशासन के शिक्षा विभाग में चले गए और फिर उनहोंने उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य किया। लगभग 31 वर्ष अध्यापन कार्य करने के पश्चात् वे निकट की जे.जे. कालोनी नारायणा कैम्प के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से 31 मई 1995 को सेवा निवृत हुए।

भूटानी जी की वृति बचपन से ही धार्मिक थी।

उनके गाँव में गुरूद्वारा था, अत: बचपन में वे गुरूद्वारे में जाया करते थे। हिसार में घर के निकट सनातन धर्म मंदिर था तो वे उसमें जाते रहे। दयानन्द कालेज हिसार में पढ़ते समय उनको वैदिक धर्म व आर्य समाज की जानकारी हुई। एक मित्र की प्रेरणा से उन्होंने गायत्री जप प्रारम्भ किया जो आज तक जारी है।

नारायणा विहार का घर भूटानी जी ने सन् 1970 में बनवाया और फिर यहीं रहना शुरू किया। बाद में पडौस में आर्य समाज मंदिर का निर्माण हुआ। उन्होंने मंदिर के निर्माण में सहयोग किया और उसके सदस्य भी बने परन्तु उन्होंने उसमें जाना प्रारम्भ नही किया। पड़ोसन श्रीमती विमला वधवा ने उन्हें आर्य समाज मंदिर में आने के लिए बहुत बार प्रेरित किया। यहाँ के धर्माचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी ने भी उन्हें दैनिक यज्ञ तथा रविवारीय सत्संग में आने को काफी प्रेरित किया। इन दोनों की प्रेरणा से वे मंदिर में आने लगे। अब वे नियमित रूप से दैनिक यज्ञ में आते हैं और आर्य समाज नारायणा विहार के समित्पाणी हैं।

●

पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आर्य समाज नारायणा विहार प्रत्येक मास की पूर्णिमा को पारिवारिक सत्संग का समायोजन करता है। आर्य समाज के विद्वान पुरोहित आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी उसको सम्पन्न करवाते है। सायंकालीन संध्या, हवन तथा प्रवचन देकर वे उपस्थित जनों का मार्गदर्शन करते हैं। सत्संग का समय गर्मियों में प्राय: 6:30 से 8 बजे तथा सर्दियों में 6 से 7:30 बजे तक होता है।

पूर्णिमा के पारिवारिक सत्संग के लिए आर्य समाज नारायणा विहार सारी व्यवस्था करता है। सत्संग कराने वाले यज्ञमान को बैठने का स्थान देना होता है व बाँटने के लिए प्रसाद की व्यवस्था करनी पड़ती है और अपने पारिवारिक जनों, अडौसी-पडौसी तथा इष्ट-मित्रों को सत्संग में बुलाना होता है।

यह आवश्यक नही कि आर्य समाज का सदस्य अथवा सम्बधित व्यक्ति ही पूर्णिमा का सत्संग करवा सकता है। नारायणा क्षेत्र में अधिवासित कोई भी व्यक्ति अपने आवास पर पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग करवा सकता है लेकिन सत्संग वैदिक सिद्धान्तों पर ही आधारित होगा। जो व्यक्ति पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग करवाना चाहता है वह आर्य समाज के अधिकारियों से सम्पर्क कर सकता है। जनवरी 2018 से मार्च 2019 तक निम्न सदस्यों/ व्यक्तियों ने अपने आवास पर पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग करवाया-

1. पौष माह की पूर्णिमा का सत्संग 2 जनवरी 2018 को एफ-52 नारायणा विहार में श्री सुरेन्द्र मलिक के आवास पर हुआ।
2. माघ की पूर्णिमा का सत्संग 31 जनवरी 2018 को जी- 48 में श्री मनीष भल्ला के आवास पर हुआ।
3. चैत्र की पूर्णिमा का सत्संग 31 मार्च 2018

को डी-78 में श्रीमती द्रोपदी नारंग के आवास पर हुआ।

4. वैशाख की पूर्णिमा का सत्संग 30 अप्रैल 2018 को एफ-18 में श्री दर्शन लाल कत्याल के आवास पर हुआ।
5. ज्येष्ठ (अधिक) पूर्णिमा का सत्संग 29 मई 2018 को सी.बी-81 में श्री करण सिँह तंवर, मंत्री के आवास पर हुआ।
6. ज्येष्ठ (शुद्ध) पूर्णिमा का सत्संग 28 जून 2018 को आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री के आवास पर हुआ।
7. भाद्रपद पूर्णिमा का सत्संग 25 सितम्बर 2018 को जी-58 में श्री मनोहर लाल चिटकारा के आवास पर हुआ।
8. आश्विन की पूर्णिमा का सत्संग 24 अक्टूबर 2018 को ई-240 में श्री नरेश कालरा के आवास पर हुआ।
9. कार्तिक पूर्णिमा का सत्संग 23 नवम्बर 2018 को बी-21 में डा. सुदर्शन कुमार रहेजा के आवास पर हुआ।
10. मार्गशीर्ष पूर्णिमा का सत्संग 22 दिसम्बर 2018 को सी-86 में श्री प्रवीन दीपक ओबराय के आवास पर हुआ।
11. पौष पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग 21 जनवरी 2019 को जी-229 में श्री चन्द्रशेखर सन्दूजा के आवास पर हुआ।
12. माघ पूर्णिमा का सत्संग 19 फरवरी 2019 को आर्य समाज मंदिर में हुआ।

ध्यान रहे, फाल्गुन और श्रावण माह की पूर्णिमाओं को होली और रक्षाबन्धन के त्यौहार होने के कारण इन दो पूर्णिमाओं पर पारिवारिक सत्संग का समायोजन नही होता है। ●

उलझे प्रश्न कब सुलझेंगे

उन राहों का पता बता दो,
जहाँ हमें जाना है।
कौन, कहाँ से आए हैं,
नहीं हमने पहचाना है।
जिन्हें कहा करते अपना,
क्या वे सारे अपने हैं?
नयन मूंद कर जिन्हें देखते,
क्या कोरे सपने है?
जीवन-मृत्यु, मृत्यु और जीवन,
कैसे गलियारे हैं?
कहाँ शुरू और कहाँ अंत,
ये उत्तर अनजाने हैं।
कोई दिखा दे जरा रोशनी,
दीपक ज्ञान जला दे।
कब तक प्रश्न जीव के उलझे
कोई तो सुलझा दे।

-सत्या त्रिपाठी
एच-95, नारायणा विहार

पुल की सीख

जो है यह ऊँचा पुल
एक बात हर पथिक से कहता-
मेरी चढ़ाई देखकर, क्यों जाता है घबरा?
चढ़ते समय, कष्ट अवश्य होता है।
लेकिन, उतरते समय, जो हर्ष होता है मन में,
उसका अनुभव करता है वही,
जो चढ़कर उतरता है।

-करण सिंह तँवर, मंत्री

ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल में जन्मदिन मनाने का अनूठा कार्यक्रम

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

नारायणा विहार ई-ब्लाक में स्थित, ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल, अपने छात्र-छात्राओं तथा अध्यापिकाओं का जन्मदिन स्कूल प्रांगण में हवन करवाके और छात्र-छात्राओं को आशीर्वाद दिलवाकर एक अनूठे तरीके से मनाता है। हवन के कार्यक्रम की तिथि व समय निश्चित हो जाने के बाद आर्य समाज नारायणा विहार हवन की व्यवस्था करता है।

जिन छात्र-छात्राओं और अध्यापिकाओं का उस महीने अथवा अवधि में जन्म दिन होता है वे स्कूल प्रांगण में एक निश्चित स्थान पर एकत्र हो जाते हैं। आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित एवं वैदिक विद्वान आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी हवन सम्पन्न करवाते हैं और बच्चों का उचित मार्ग दर्शन करते हैं।

शान्ति पाठ के पश्चात् छात्र-छात्रओं को यज्ञ-ब्रह्मा, अध्यापिकाएं, आर्य समाज के अधिकारीगण तथा अन्य उपस्थित महानुभवों द्वारा पुष्पवृष्टि करके आशीर्वाद दिया जाता है और उनके उत्कृष्ट भविष्य की कामना की जाती है। बच्चे दोनों हाथ जोड़कर तथा आँखे बंद करके बड़ों का आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। इस यज्ञ कार्यक्रम में नर्सरी से लेकर 12 वीं कक्षा तक के विद्यार्थी भाग लेते है।

अपना जन्म दिन मनाने वाले छात्र-छात्राएं उस दिन लड्डू का प्रसाद लेकर आते हैं जिसे वे हवन के बाद अपनी-अपनी कक्षाओं में जाकर सबको वितरित करते हैं। यह कार्यक्रम पिछले 3 वर्षों से लगातार इसी प्रकार चल रहा है। वर्ष 2018-19 में यज्ञ का यह कार्यक्रम निम्न दिवसों में हुआ-

1. 3-2-2018 (शनिवार)
2. 17-2-2018 (शनिवार)
3. 18-5-2018 (शुक्रवार)
4. 25-8-2018 (शुक्रवार)
5. 3-11-2018 (शनिवार)
6. 31-1-2019 (वीरवार)
7. 9-2-2019 (शनिवार)

इस कार्यक्रम की मुख्य संयोजिका ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल की अध्यापिका श्रीमती रिटा यादव है जो टी.जी.टी. संस्कृत व विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग तथा सामान्य ज्ञान है। इसके साथ ही वे कक्षा 5 व 6 की सुपरवाइजर और स्कूल की एन. सी.सी टुकड़ी की एन.सी.सी आफिसर भी है।

स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती सुमति आनन्द जी हैं जिनके सहयोग एवं सहमति के कारण ही यह कार्यक्रम सम्पन्न हो पाता है। बच्चों को भारतीय संस्कृति से जोड़ने वाले इस कार्यक्रम के लिए आर्य समाज नारायणा विहार ज्ञान मंदिर पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्य श्रीमती सुमति आनन्द तथा संयोजिका श्रीमती रिटा यादव को धन्यवाद ज्ञापित करता है। ●

आर्य समाज की वर्तमान कार्यकारिणी

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आर्य समाज नारायणा विहार एक पंजीकृत संस्था है। इसकी प्रबन्ध समिति तथा अन्तरंग सभा इसकी कार्यकारिणी कहलाती है। वर्तमान प्रबन्ध समिति का गठन रविवार 31-12-2017 को साधारण सभा की बैठक में निर्विरोध निर्वाचन के द्वारा हुआ था। निर्वाचन की पूरी प्रक्रिया नियमानुसार वरिष्ठ सदस्य एवं निर्वाचन अधिकारी श्री राम गोपाल भटनागर जी ने सम्पन्न करवाई थी। वर्तमान प्रबन्ध समिति इस प्रकार चुनी गई थी।

प्रबन्ध समिति

1.	प्रधान श्री सतीश कामरा	G-47	9810168242, 25797824
2.	उप प्रधान (प्रथम) श्री सुनील कोहली	F-90	9810879269, 25793693
3.	उप प्रधान (द्वितीय) श्री विजय घई	C-53	9212223931
4.	मंत्री श्री करण सिंह तँवर	CB-81	8860703535
5.	उपमंत्री (प्रथम) श्री राकेश वधवा	G-225	9717788586, 8588888590
6.	उपमंत्री (द्वितीय) श्री प्रवीण भाटिया	F-35	9873362272, 25790237
7.	कोषाध्यक्ष श्री राकेश मल्होत्रा	G-167	9582791580, 25793354

अन्तरंग सभा के सदस्य (सर्वश्री/श्रीमती)

1.	श्याम सुन्दर लाल गुप्ता	C-51	9717221079
2.	राम गोपाल भटनागर	A-89/1	9811912995
3.	दर्शन लाल कत्याल	F-18	8287216226
4.	डा. सुदर्शन कुमार रहेजा	B-21	9899079089
5.	रणवीर सिहँ	G-79	9818281981
6.	रविन्द्र गर्ग	F-83	9999466611
7.	प्रवीन दीपक ओबराय	C-86	9810433779
8.	विशू तँवर	I-336	9910791010
9.	राजीव अनेजा	G-186	9810297145
10.	राजीव भूटानी	G-118	9971316035

11.	चन्द्र शेखर सन्दूजा	G-229	9958809791
12.	अशोक मेहता	E-287	9811086198
13.	सुरेन्द्र मलिक	F-52	9810416003
14.	जसवन्त राय	I-299	
15.	अजय महाजन	H-18	8918658613
16.	विजय कुमार अब्बी	G-206	9968303523
17.	मनोहर लाल गुलाटी	D-77	9312278206
18.	अजय वीर सिहँ	G-79	9811410614
19.	प्रेम लता भटनागर	A-89/1	9953280349
20.	सन्तोष वधवा	E-181	9868616260
21.	द्रोपदी नारंग	D-78	9811737907
22.	परमजीत कौर	G-129	9899607129
23.	नयन तारा	G-79	9953925134
24.	स्वर्ण आहूजा	G-100	9990599966
25.	संजीव सेतिया	E-289	9212048830

छोटी-छोटी बातें

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

1. वर्तमान प्रबन्ध समिति ने आर्य समाज का सभागार 1 जवनरी 2018 से 31 मार्च 2019 की अवधि में बैठक, विवाह-शादी के लिए 23 बार उपलब्ध करवाया।
2. इस अवधि मे होम्योपैथिक डाक्टर श्री अशोक वर्मा ने लगभग तीन हजार मरीजों का परीक्षण करके मुफ्त दवा दी।
3. इसी प्रकार आयुर्वैदिक/ऐलोपैथिक डाक्टर श्री सजन सिहँ यादव ने 3100 मरीजों का परीक्षण करके मुफ्त दवा दी। उन्होंने लगभग 2500 मरीजों का मुफ्त रक्त चाप नापा और 67 मरीजों का इस अवधि में सुगर टेस्ट किया।
4. क्रिया, चौथा, उठाला, तेरहवी के लिए आर्य समाज का सभागार निशुल्क प्रदान किया जाता हैं। इनके लिए इस अवधि में यह 13 बार दिया गया।

●

यज्ञ प्रेमी युगल

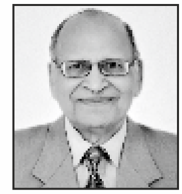

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आर्य समाज नारायणा विहार का दैनिक यज्ञ प्रातः काल 6:30 से 7:30 बजे तक और रविवार को प्रातः 7 से 8 बजे तक होता है। मौसम कोई भी क्यों न हो दैनिक यज्ञ का यही समय रहता है। बहुत से याज्ञिक महानुभाव प्रतिदिन यज्ञशाला में उपस्थित होकर सामूहिक रूप से दैनिक यज्ञ सम्पन्न करते हैं।

इन दैनिक यज्ञ कर्ताओं में 82 वर्षीय डा. बी.पी. एस. गोयल (पूरा नाम डा. बाल बालिन्दर पाल सिहँ गोयल) तथा 81 वर्षीय उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्नेह लता गोयल भी हैं जो नित-नियम से प्रतिदिन यज्ञ करने आर्य समाज में आते हैं। अत:एव आर्य समाज में उनको यज्ञ- प्रेमी युगल के नाम से जाना जाता है। वे स्वयं ही नही आते, कभी-कभी अपनी बेटी अनु अग्रवाल, बेटा डा. आलोक गोयल तथा पुत्रवधू डा. अनुभा गोयल को भी साथ लाते हैं।

दैनिक यज्ञ में ही नही, इस यज्ञ प्रेमी जोड़े ने शारदीय नवरात्रों में 10 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2018 तक कालोनी के पार्को में हुए सामूहिक यज्ञ में भी प्रतिदिन उपस्थित होकर यज्ञ सम्पन्न किया। इस वर्ष 27-28 फरवरी तथा 1 मार्च को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस पर आर्य समाज ने तीन दिन प्रभात फेरी निकाली। यह युगल तीनों दिन प्रभात फेरी में सम्मिलित हुआ और सारे रास्ते पैदल चला। समाप्ति स्थल पर यज्ञ करने के उपरान्त ही ये दोनों पति-पत्नी घर लौटा करते थे। इतनी बड़ी उम्र में उनका इतना उत्साह और उमंग देखकर नौजवान भी आश्चर्यचकित होते हैं। उनके इस यज्ञ प्रेम के बारे में पूछने पर उन्होंने बताया कि यज्ञ से एक तो पर्यावरण शुद्ध होता है, दूसरे उन्हें बहुत सकून मिलता है, इस लिए यज्ञ से उन्हें बहुत प्रेम हैं।

डा. गोयल सन् 1948 में रोहतक से दिल्ली आएं। उन्होंने 1957 में दिल्ली विश्वविघालय से एम.ए. किया। सन् 1959 में एम.एस.सी. की और उसके बाद पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद दिल्ली के पूसा संस्थान में उनकी नियुक्ति सांख्यिकी अफसर के पद पर हुई। वहाँ सरकारी सेवा करते हुए उन्होंने 1987 में निदेशक के पद से स्वैच्छिक सेवा निवृति ले ली और संयुक्त राष्ट्र संघ (यू.एन.ओ.) के खाद्य एवं कृषि संस्थान में कार्य भार संभाला। उसका मुख्यालय रोम में है। वहाँ कार्य करते हुए उन्होंने 46 देशों की यात्राएं की। सन् 1960 में उनका विवाह श्रीमती स्नेह लता से हुआ। वह भी लखनऊ विश्व विद्यालय से मनोविज्ञान में एम.ए. है। उनके दो पुत्र और एक पुत्री हुई। संयुक्त राष्ट्र संघ से रिटायर होकर डा० गोयल भारत लौट आएं और नारायणा विहार के अपने घर एफ-ब्लाक में रहने लगे।

डा. गोयल समाज सेवा मे बहुत रूचि रखते है। वे एफ-ब्लाक रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन के प्रधान बने। फैडरेशन आफ नारायणा विहार रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन का गठन होने के बाद उसके भी वे महासचिव निर्वाचित हुए। सन्

2002 में वे बी–ब्लाक में रहने लगे। वे सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल के व भारत विकास परिषद नारायणा विहार के प्रधान पद पर रहे। वे सेवा भारती के एक सक्रिय सदस्य और बनवासी कल्याण संघ के प्रधान भी रहे।

डा. गोयल के बच्चों ने मिलकर अपने माता–पिता के नाम से एक ट्रस्ट जिसका नाम "बाल–स्नेह चाईल्ड वेलफेयर ट्रस्ट" बनाया हुआ है जिसके अन्तर्गत 70,000/– (सत्तर हजार रूपये) की धनराशि प्रतिवर्ष बेसहारा अथवा विधवा स्त्रीयों के बच्चों की शिक्षा हेतु खर्च की जाती है।

डा. गोयल के पूसा संस्थान के साथी श्री जगत नारायण गर्ग उनके घर हर महीने के प्रथम रविवार को हवन करने आते थे। आर्य समाज के धर्माचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी ने उनके बच्चों के विवाह सम्पन्न करवाएं थे। गर्ग जी के निधन के बाद उन्होंने आर्य समाज द्वारा पूर्णिमा का पारिवारिक सत्संग अपने घर पर कई बार करवाया। धीरे–धीरे वे आर्य समाज में आने लगे। अब तो वे धर्मपत्नी सहित प्रतिदिन आर्य समाज के दैनिक यज्ञ में शामिल होते हैं। उन्हें यज्ञ से अत्यधिक प्रेम हो गया है। इस यज्ञ–प्रेमी युगल का यज्ञ–प्रेम अन्य लोगों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। ●

स्मृतियाँ शेष

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

एक जनवरी 2018 से लेकर 31 मार्च 2019 तक की अवधि में हमारे निम्न सदस्य अपने नश्वर शरीर को छोड़कर परलोक सिधार गए और हमेशा के लिए जुदा हो गए। अब हमारे पास उनकी मधुर स्मृतियाँ ही शेष है–

	नाम	पता	निधन
1.	श्री हरबंश लाल खुराना	जी–156	27-02-2018
2.	श्री रोशन लाल गुलाटी	ई–190	09-11-2018
3.	श्री राजेश आहूजा	जी–100	12-12-2018
4.	श्रीमती सुशीला रानी चड्ढ़ा	ई–227	02-01-2019
5.	श्री ओम प्रकाश चोपड़ा	जी–117	11-01-2019
6.	श्रीमती शान्ती सरदाना	ई–7	24-01-2019
7.	श्रीमती चन्द्र कान्ता जोशी	ई–163	27-02-2019

आर्य समाज उपरोक्त सदस्यों को श्रद्धा सुमन अर्पित करता हैं और उनके परिवारी जनों से निवेदन करता है कि वे उनके बताएं मार्ग पर चलकर उनकी अधूरी इच्छाओं को पूरा करें।

हमारे रविवारीय यज्ञमान

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

हमारे अधिकांश सदस्य अपना जन्म दिन अथवा विवाह दिवस रविवार को आर्य समाज की यज्ञशाला में यज्ञमान बनकर सामूहिक रूप से मनाते है। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य श्री श्याम देव शास्त्री जी प्रातकालीन यज्ञ के मंत्रों के पश्चात् मौके के अनुसार यज्ञमान की सुख ,शान्ति, समृद्धि, सेहत तथा दीर्घायु के निमित्त विशेष मंत्रों का पाठ करते है। पूर्णाहुति के पश्चात् वे यज्ञमान के ऊपर पुष्प वृष्टि करवाकर वरिष्ठ सदस्यों का आशीर्वाद भी दिलवाते हैं। प्रत्येक रविवार को यज्ञ का आयोजन प्रातकाल 7 से 8 बजे तक होता है।

ऐसे सदस्यों की बीते सप्ताह में उनके जन्म अथवा विवाह की वर्षगाठ की तिथि कोई भी रही हो वे रविवार को यज्ञमान बनकर, सबके साथ यज्ञ करके तथा सबका आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्राप्त करके उसे मनाते है। ऐसे भी सदस्य है जो अपने घरों में निश्चित तिथि को जन्म दिन व विवाह दिवस मनाने के उपरान्त भी रविवार को आर्य समाज में यज्ञमान बनकर दोबारा मनाते है। ऐसे यज्ञमान प्रसाद भी बाँटते हैं।

रविवार को स्वेच्छा से यज्ञमान का आसन सुशोभित करने वाले महानुभाव एक-दो दिन पहले प्रधान, मंत्री, शास्त्री जी को फोन करके यज्ञमान बनने व प्रसाद बाटँने की सूचना दे देते हैं और फिर उसी के अनुरूप व्यवस्था की जाती है।

कुछ सदस्य अपने दिवंगत माता-पिता अथवा अन्य प्रियजन की पुण्यतिथि को भी यज्ञमान बनकर उनको याद करके उनके प्रति श्रद्धाभाव प्रकट करते है। वे उनकी स्मृति में प्रसाद भी वितरित करवाते हैं। जिनके बच्चे देश के दूसरे शहरों में अथवा विदेशों में कार्यरत है, वे माता-पिता भी उनके जन्मदिन रविवार को यज्ञमान बनकर मनाते हैं।

जो आर्य समाज के सदस्य नही हैं, यदि वे भी अपना जन्मदिन अथवा वैवाहिक वर्षगाठ आर्य समाज में रविवार को यज्ञमान बनकर मनाना चाहते है, उनका भी स्वागत है। बस उन्हें उस रविवार से एक-दो दिन पहले प्रधान, मंत्री, शास्त्री जी को उसके लिए सूचित करना पड़ेगा और उस रविवार के दिन उसे यज्ञशाला में 7 बजे प्रात: उपस्थित होना पड़ेगा। वर्ष 2018-19 में जिन महानुभावों ने रविवार को यज्ञमान का आसन सुशोभित किया, उनके नाम इस प्रकार है-

7-1-2018	श्री रमेश अग्रवाल, श्री मनोहर लाल गुलाटी, कुमारी निहारिका कोहली
14-1-18	श्रीमती सुशीला तँवर व श्रीमती प्रेम लता भटनागर
21-1-18	श्री विजय कुमार अब्बी व श्री अंकुश कालरा
28-1-18	श्रीमती निधि कामरा व श्री मोहित कामरा
04-2-18	श्री विजय कुमार अब्बी

11-2-18 श्री विशू तँवर, श्री मोहित कामरा, श्री रविन्द्र गर्ग,श्री प्रवीन भाटिया, श्री विजय अब्बी, श्री राम गोपाल भटनागर

18-2-18 श्री सतीश कामरा परिवार

25-2-18 श्रीमती द्रोपदी नारंग

04-3-18 श्री जसवन्त राय

11-3-18 श्री रोहन गर्ग

18-3-18 श्री विशू तँवर परिवार

29-4-18 श्री जसवन्त राय

06-5-18 श्री रणवीर सिहँ व श्री सतीश तँवर

13-5-18 श्री करण सिंह तँवर

20-5-18 श्री चन्द्र शेखर सन्दूजा, श्री ज्ञान चन्द भूटानी, श्री मोहित कामरा

27-5-18 श्री उदय नारंग व श्री निर्भय नारंग

3-6-18 डा. सुदर्शन कुमार रहेजा

10-6-18 श्रीमती विमलेश नांगिया परिवार

17-6-18 श्री रविन्द्र गर्ग परिवार

24-6-18 श्री प्रवीन दीपक ओबराय परिवार

01-7-18 श्री राकेश मल्होत्रा

08-7-18 श्री राजेश वधवा

15-7-18 श्री ज्ञान चन्द भूटानी परिवार

22-7-18 श्री वी.पी. चावला व श्री रवि कोहली

29-7-18 श्री लक्षित नारंग

05-8-18 श्रीमती रजनी कालरा

19-8-18 श्री प्रवीन भाटिया परिवार

02-9-18 श्री सतीश कामरा परिवार

09-9-18 श्री रमेश नांगिया

23-9-18 श्रीमती नयन तारा

30-9-18 खोसला परिवार

21-10-18 डा. बी.पी.एस. गोयल परिवार

28-10-18 डा. बी.पी.एस. गोयल परिवार

04-11-18 श्री सतीश कामरा परिवार

11-11-18 श्री दर्शन लाल कत्याल व श्री रणवीर सिहँ

18-11-18 श्री राम गोपाल भटनागर परिवार श्रीमती स्नेह गोयल व डा. बी. पी.एस. गोयल

25-11-18 श्री रविन्द्र गर्ग

9-12-18 श्री रणवीर सिहँ

16-12-18 श्री रविन्द्र गर्ग परिवार

23-12-18 श्रीमती नयन तारा व श्रीमती सुशीला देवी

30-12-18 श्री श्याम देव शास्त्री परिवार

06-1-19 श्री अंकित गुप्ता

13-1-19 श्री सतीश कामरा परिवार

20-1-19 श्री अंकुश कालरा

27-1-19 श्री अजयवीर सिँह परिवार

03-2-19 श्री दर्शन लाल कत्याल

10-2-19 डा. अन्नु अग्रवाल

17-2-19 श्री सतीश कामरा परिवार

17-3-19 श्रीमती इन्द्रा व श्रीमती स्वर्ण आहूजा

24-3-19 श्री अजय वीर सिँह ●

नन्हें सपनो का आर्य समाज

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आपकी कालोनी में आपकी प्रिय संस्था "आर्य समाज" समाज सेवा के कार्यो में निरन्तर अग्रसर है। आप यह भली भांति जानते हैं कि आर्य समाज नारायणा विहार, समाज में व्याप्त अज्ञान, अविद्या, पाखण्ड और अन्धविश्वास के निर्मूलन के लिए वेद प्रचार का कार्य करता है, जिसके अन्तर्गत यज्ञ-हवन, प्रवचन, रविवारीय सत्संग, महिला सत्संग, पारिवारिक सत्संग, भजन संध्या, प्रभात फेरी, वार्षिक उत्सव, श्रावणी पर्व आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

आप यह भी जानते हैं कि आर्य समाज स्त्री व पुरूषों की अलग-अलग योग कक्षाएं लगाकर, निशुल्क होम्योपैथिक व आयुर्वैदिक औषघालय चलाकर, गरीब लडकियों के लिए सिलाई केन्द्र चलाकर समाज के लोगों की सेवाएं कर रहा हैं। परन्तु आप शायद यह नही जानते होंगे कि आर्य समाज पढ़ने वाले निर्धन बच्चों के लिए क्या कर रहा हैं?

आर्य समाज निर्धन बच्चों को निशुल्क इंगलिश, गणित तथा विज्ञान विषयों की टुटोरियल कक्षाएं चलाकर शिक्षा के क्षेत्र में उनकी सहायता करके उनको जीवन में आगे बढ़ने के अवसर प्रदान कर रहा हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त करने में उनकी आर्थिक रूप से मदद भी करता हैं। वर्ष 2018 से बच्चों को कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जा रही है।

इस समय यहाँ 80 बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, जिनमें 45 लडके तथा 35 लड़कियां हैं। सारे बच्चे गरीब परिवारों से आते है। उनके माता-पिता उन्हें कम्प्यूटर की शिक्षा या ट्यूशन पढ़ाने का खर्च वहन करने में समर्थ नही है। ये बच्चे जे-जे कलोनी (बुद्धनगर) इन्द्रपुरी से या नारायणा गाँव में मेहनत-मज़दूरी करके जीवन यापन करने वाले किरायदारों के बच्चे हैं। ये बच्चे भी जीवन में बड़ा बनना चाहते है। कोई ड़ाक्टर बनने का तो कोई इंजीनियर बनने का सपना संजोए हुए है। कोई आई.ए.एस अधिकारी तो कोई आई.पी.एस अधिकारी बनना चाहता है। इन बच्चों के सपनों को पूरा करने में आर्य समाज प्रयासरत है। इस निशुल्क सेवा का हमने नाम दिया है- "नन्हें सपने"। इन बच्चों में से एक बच्चे ने बी.टेक तथा एक दूसरे बच्चे ने दिल्ली आर्ट कालेज से फाईन आर्ट में डिप्लोमा प्राप्त कर लिया है। यहाँ के कई बच्चों ने स्कूली शिक्षा पूरी करके नौकरी भी प्राप्त कर ली है।

गरीब बच्चों को ट्यूशन पढ़ाने तथा कम्प्यूटर सिखाने का यह सेवा कार्य श्री अजय वीर सिँह की देखरेख में चलता है। वे इसके संयोजक है। इसमे कक्षा 6 से लेकर कक्षा 12 तक में पढ़ने वाले सरकारी स्कूलों के बच्चे भाग लेते हैं। प्रत्येक रविवार को 9:30 से 12:30 बजे तक इनकी कक्षाएं लगती है। कुछ बच्चे प्रतिदिन आकर पढ़ते हैं तो कुछ सप्ताह में तीन दिन आकर पढ़ते है।

आर्य समाज में पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे का ध्यान रखा जाता है। यदि कोई बच्चा बिना बताएं आना बंद कर देता है तो उसके घर जाकर उसके न आने का कारण जाना जाता है। जो बच्चा बीमार हो

जाने के कारण यहाँ आना बंद कर देता है तो संयोजक श्री अजय वीर सिँह स्वयं उसके घर जाकर उसकी कुशलक्षेम पूछते है। पढ़ाई के अलावा यहाँ बच्चों को नाटक या लघु नाटिका और डाँस भी सिखाया जाता है। विशेष अवसरों पर बच्चे यहाँ सीखी कला की प्रस्तुति देते है।

यहाँ पढ़ने वाले बच्चों को साल में एक-दो बार पिकनिक पर ले जाया जाता है। इन बच्चों के निमित्त दानी लोग कई तरह से दान देते है। आर्य समाज ने उनके दान का एक अलग खाता- "बाल विकास निधि" खोला हुआ हैं। दान की धनराशि को इस खाते में जमा कर दिया जाता है और जरूरत के मुताबिक उसको बच्चों पर खर्च कर दिया जाता है। बच्चों को पिछले वर्ष 23 दिसम्बर 2018 को 100 कम्बल बाँटे गए थे। कई दानी महानुभाव बच्चों को अपने हाथों से वस्तु का दान करते हैं । एक दानी ने पिछले दिनों हर बच्चें को एक-एक बैग दिया तो एक दूसरे दानी ने प्रत्येक बच्चे को 2-2 कापियाँ बाँटी। एक दानी ने निकट के बीकानेर रेस्तरां में बच्चों को ले जाकर नाश्ता करवाकर अपना जन्म दिन मनाया।

यहाँ पढ़ने वाले प्रत्येक बच्चे का नाम पता, माता-पिता का नाम, कक्षा, स्कूल, फोन आदि पूरा विवरण एक रजिस्टर में लिख लिया जाता है। बच्चों को शिक्षाप्रद व ज्ञानवर्धक फिल्में या डोक्यूमैंटरी दिखाने के लिए पिछले दिनों एक टेलिविजन खरीदा है। चार कम्प्यूटरों का कक्ष अलग हैं। कम्प्यूटर सीखने वाले बच्चों के अलग-अलग बैच बनाकर उन्हें कम्प्यूटर चलाने की शिक्षा दी जाती है।

निर्धन बच्चों को निशुल्क ट्यूशन पढ़ाने का आर्य यमाज नारायणा विहार का "नन्हें सपने" का यह कार्यक्रम पिछले 12 वर्षो से निरन्तर चल रहा है। इस कार्यक्रम की शुरूआत चन्द बच्चों से हुई थी। हर साल बच्चों की संख्या बढ़ती जाती है। इससे स्पष्ट है कि बच्चों का यह कार्यक्रम प्रसिद्धि को प्राप्त कर रहा है। गरीब बच्चों के सपनों को पूरा करने का आर्य समाज का यह लघु प्रयास है। पता नही इस प्रयास के द्वारा नन्हें सपनों को आर्य समाज कितना पूरा कर पाता हैं। ●

कितना अन्तर

रावण को तपस्या का अहंकार है,
हमारा अहंकार ही तपस्या है।

राम को गुणों का अहंकार नही है,
हमारे अहंकार में गुण नहीं है।

उर्मिला के मौन में कर्त्तव्य है,
हम कर्त्तव्य के प्रति मौन है।

केवट की शंका में भक्ति है,
हमारी भक्ति में शंका हैं।

जटायु की लड़ाई में धर्म है,
हमारे धर्म में लड़ाई है।

शबरी की झूठन में प्रेम है,
हमारे प्रेम में झूठन है।

हनुमान की लघुता में महत्व है,
हमारी महत्ता में लघुता हैं।

श्रवण के कष्ट में सेवा है,
हमारी सेवा में कष्ट है।

-संतोष वधवा
ई-181, नारायणा विहार

अच्छे बच्चे अच्छे नागरिक

रणवीर सिंह, प्रधान, भारत विकास परिषद, नारायणा विहार

बच्चे उस शक्ति का नाम हैं, जो दिशावान् हो जाये तो बहुत बड़ा निर्माण होगा और इसके विपरीत यदि दिशाहीन हो जाये तो महाविनाश होगा। जो राष्ट्र चहुंमुखी विकास करना चाहता हैं, वह अपने बच्चों को ठीक दिशा दे, यही उसका प्रमुख कर्त्तव्य है।

हमारे धर्म-शास्त्रों ने मनुष्य-जीवन को बड़े क्रमबद्ध तरीके से विभाजित किया है। इसके लिए माता-पिता व आचार्य को सर्वोपरि जिम्मेदारी दी गई हैं। शतपथ-ब्राह्मण में कहा है- **"मातृमान पितृमानार्चावान् पुरुषों वेद"** अर्थात्- जब तीन उत्तम शिक्षक अथार्त् एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य हो, तो मनुष्य ज्ञानवान होता है। वह कुल धन्य है तथा वह सन्तान बड़ा भाग्यवान है, जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान हों। इनमें भी जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुंचता है, इतना अन्य किसी से नहीं। जितना माता सन्तानों पर प्रेम और उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं कर सकता। ये सब महर्षि दयानन्द कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय समुल्लास में दर्शाया है। महाभारत में ठीक ही कहा है- **"गुरुणां चैव सर्वेषां माता परम को गुरूरुः"** अर्थात् सब गुरुओं में माता परम गुरू है। इससे पूर्व बच्चा माता के गर्भ और गोद मे पलता है, अतः माता बालकों को सदा उत्तम शिक्षा किया करें, जिससे सन्तान सभ्य हो। माता ऐसा प्रयत्न करें, जिससे सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रूचि रखने वाली बने। उन्हें ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये कि वे क्रीडा, रोदन, हास्य, लड़ाई-झगड़ा, हर्ष-शोक किसी पदार्थ में लोलुपता और इर्ष्या - द्वेष न करे। प्रयत्न करें कि बालकों में सत्यभाषण, शौर्य, धैर्य एवं प्रसन्नता आदि गुणों का विकास हो।

बच्चों को सहयोगात्मक वातावरण देने से उनका व्यक्तित्व सहयोगी होता है। असहयोगात्मक वातावरण में बच्चें असामाजिक हो जाते हैं। प्रशंसनीय कार्य हेतु बच्चों को समय-समय पर पुरस्कार तथा गलत कार्य हेतु हल्का-फुल्का दण्ड देना उचित है।

परिवार की भाषा, रीति-रिवाज, परम्परायें, खानपान, धार्मिक मान्यतायें व आदतों का प्रभाव बालकों पर पड़ता है। स्नेहपूर्ण पारिवारिक जीवन में बालक का व्यक्तित्व विकास तीव्रता से होता है, जबकि कलहयुक्त वातावरण में विपरीत प्रभाव पड़ता है, परिवार ही वास्तव में बालक की प्रथम पाठशाला होती है।

जन्म से पांचवे वर्ष तक माता बालकों को शिक्षित करे। "माता निर्माता भवति" के आधार पर माता का अर्थ है- निर्माण करने वाली। अतः बालकों के चरित्र निर्माण की ओर माता पूरा ध्यान दे। माता की गोद से उतरकर बालक पिता की अंगुली पकड़कर चलता है। अतः छठे से आठवें वर्ष तक पिता का दायित्व है कि वह बालक के जीवन में उत्तम संस्कार व शिष्टता की स्थापना करे। नवें वर्ष के प्रारम्भ में द्विज अपने सन्तानों का उपनयन और वेदारम्भ संस्कार करके आचार्य-कुल में अर्थात्

गुरूकुल में अथवा जहां पूर्ण विद्वान् और पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा और विद्यादान करने वाली हों, उनकी पाठशालाओं में लड़के-लड़कियों को भेज़ दे, ऐसी जीवन निर्माण पद्धति महर्षि मनु ने अपने ग्रन्थ "मानवधर्मशास्त्र" एवं महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" में लिखी है।

आचार्य को विद्यादान के साथ-साथ सदाचार, सांस्कृतिक मान्यतायें,चरित्र-निर्माण आदि की भी शिक्षा प्रदान करनी होती है, क्योंकि आचार्य का अर्थ है- "आचारं ग्राह्यतीति आचार्य:" अर्थात् जो बालकों को आचार का ग्रहण कराता है, वह आचार्य है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि बच्चे ही भविष्य के नागरिक हैं। बच्चों को चाहिए-भरपूर स्नेह, अच्छे संस्कार, अच्छी मित्रता, सही मार्गदर्शन और कदम-कदम पर हौसला अफजाई। फिर देखिये अपने सम्पूर्ण मनोबल से वे कैसे सम्पूर्ण व्यक्तित्व वाले समझदार अच्छे इन्सान बनते हैं। ●

रविवारीय सत्संग के प्रवचन कर्ता

करण सिंह तंवर, मंत्री, आर्य समाज नारायणा विहार

आर्य समाज नारायणा विहार में प्रत्येक रविवार को प्रात: 8 बजे से 9 बजे तक वैदिक सत्संग होता है। उसके लिए हर रविवार को अलग-अलग विद्वान प्रवचन देने के लिए आमंत्रित किए जाते है। हमारा प्रयास वैदिक जगत के उच्च कोटि के विद्वानों को आमंत्रित करने का रहता है। तभी तो आपको अपने आर्य समाज में उच्च कोटि का सत्संग सहज सुलभ होता है। जनवरी 2018 से 31 मार्च 2019 तक जो वैदिक विद्वान प्रवचन देने आएं, उनके नाम इस प्रकार है-

1. डा. महेश विद्यालंकार
2. डा. आशीष गुप्ता
3. डा. वेद प्रिय प्रचेता
4. आचार्य श्याम देव शास्त्री
5. आचार्य भद्रकाम
6. आचार्य द्विजेन्द्र शास्त्री
7. आचार्य इन्द्र देव
8. आचार्य गवेन्द्र शास्त्री
9. आचार्य विजय भूषण
10. आचार्य करण सिँह आर्य (नोएड़ा)
11. आचार्य राजवीर शास्त्री
12. आचार्य दीन बन्धु शास्त्री
13. आचार्य राजू वैज्ञानिक
14. आचार्य प्रियव्रत शास्त्री
15. आचार्य हरेन्द्र शास्त्री
16. आचार्य सुमन आर्य
17. आचार्य पवन वीर
18. श्री रणवीर सिँह आर्य
19. श्रीमती धर्म रक्षिता शास्त्री

आर्य समाज नारायणा विहार की गतिविधियां

यज्ञ एवं वेद प्रचार संबंधित गतिविधियां इस प्रकार है-

प्रात:कालीन दैनिक यज्ञ	प्रात: 6:30 से 7:30
रविवारीय यज्ञ व सत्संग	प्रात: 7:00 से 9:00
शुक्रवारीय महिला सत्संग	सायं: 3:30 से 5:30
पूर्णिमा का पारिवारिक यज्ञ	सायं 6:30 से 8:00
वार्षिक उत्सव (साप्ताहिक कार्यक्रम) प्रात: यज्ञ, सायं भजन + प्रवचन	प्रतिवर्ष अप्रैल माह में
श्रावणी चतुर्वेद शतक परायण यज्ञ एवं वेद कथा (साप्ताहिक कार्यक्रम) (प्रात: यज्ञ, सायं भजन+प्रवचन)	प्रतिवर्ष अगस्त/ सितम्बर माह में
शारदीय नवरात्रों में प्रतिदिन कालोनी के विभिन्न 9 ब्लाकों के पार्को मे दस दिवसीय यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन व विजय दशमी वाले दिन आर्य समाज के सामने स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका में पूर्णाहूति (समापन)।	प्रात: 6:30 से 8:00
महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्मोत्सव पर प्रतिवर्ष त्रिदिवसीय प्रभातफेरी एवं यज्ञ का आयोजन	प्रात: 5:30 से 7:00 (प्रभातफेरी) प्रात: 7:00 से 7:30
स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस 23 दिसम्बर पर प्रतिवर्ष भजन संध्या का आयोजन	सायं 5:00 से 7:00 (सुविधानुसार)
स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के उपलक्ष्य में 25 दिसम्बर को केन्द्रीय आर्य सभा दिल्ली द्वारा आयोजित "शोभा यात्रा" में बस भरके समाज के सदस्यो के साथ भाग लेना।	प्रतिवर्ष
विशेष अवसरों/पर्वो पर यज्ञ/प्रवचन का आयोजन -महान पुरूषों के जन्मादि राम नवमी, जन्माष्टमी आदि -पर्वो - बसंत पंचमी, होली, दीपावली, रक्षा बधंन आदि। -राष्ट्रीय पर्व - स्वतंत्रता दिवस तथा गणतंत्र दिवस -पर्यावरण दिवस, योग दिवस	प्रात: 6:30 से 8:00 (सुविधानुसार)

अन्य वेद प्रचार कार्यक्रम अंतरंग/कार्यकारिणी की अनुमति से।

सामाजिक सेवाएं:

"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना"

आर्य समाज के इस छठे नियम को उद्देश्य में रखकर आर्य समाज नारायणा विहार में निम्नलिखित समाज सेवी गतिविधियां चल रही है:

निशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सालय (डा० एस० एस० यादव)	प्रात: 8:00 से 9:00
निशुल्क होम्योपैथिक चिकित्सालय (डा० अशोक वर्मा)	प्रात: 8:30 से 9:30

ब्लड प्रेशर एवं ब्लड शुगर (आर बी एस) जांच	प्रातः 8:00 से 9:00
फिजियोथिरेपी सेवाएं (डा० प्रमोद यादव)	प्रातः 10:00 से 1:00 सायं 5:00 से 7:00 (पूर्व एपोईटमेन्ट से)
प्रात:कालीन योग कक्षा (संयोजक श्री देवेन्द्र पाहवा)	प्रातः 6:15 से 7:30
महिला सिलाई केन्द्र (शिक्षिका श्रीमती कुसुम जैन)	प्रातः 11:00 से 1:00
सायंकालीन महिला योग कक्षा (संयोजिका श्रीमती परमजीत)	सायं 5:00 से 6:00
निम्न आय वर्ग के परिवारों के लगभग 100 से अधिक बच्चों को नैतिक शिक्षा एवं स्कूली शिक्षा	प्रातः 10 से 12:00 (प्रत्येक रविवार)
हेतु ट्यूशन का प्रबंध (साईंस, गणित एवं अंग्रेजी आदि)	सायं 4:00 से 5:00 (अन्य दिन)
कम्प्यूटर की कक्षा (सयोंजक श्री अजय वीर सिंह)	सायं 5:00 से 6:00
स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका का रख-रखाव व सुंदरीकरण (संयोजक : श्री राजेश वधवा)	

परिवारों में यज्ञ प्रवचन एवं संस्कार का प्रबंध आचार्य श्याम देव शास्त्री जी द्वारा मो० 09811064932, 9350233885

आभार

आर्य समाज नारायणा विहार की समस्त गतिविधियों के निरन्तर संचालन हेतु आर्थिक व्यवस्था आर्य समाज के सदस्यों से (मासिक शुल्क/दान), अन्य सहयोगी व्यक्तियों, परिवारों व सँस्थाओं से प्राप्त राशि द्वारा हो रही है। आर्य समाज नारायणा विहार की कार्यकारिणी इन सब के प्रति आभार प्रकट करती है।

समाज सेवा की गतिविधियों के लिये कुछ विशेष धन राशि, पदार्थ व सेवा के रूप में जो सहयोग निरंतर मिल रहा है या इस वर्ष मिला है, वह इस प्रकार है:-

- एम०डी०एच० वाले महाशय धर्मपाल जी की "महाशय चुन्नी लाल चैरीटेबल ट्रस्ट" द्वारा हमारे होम्योपैथिक चिकित्सालय के लिए प्रतिमाह 2000 रूपये की राशि मिल रही है। उन का सहयोग जब से चिकित्सालय शुरू किया है, तब से मिल रहा है।
- श्री परमजीत खुराना जी प्रधान "माता ब्यन्त कौर, एजूकेशनल एंड वेलफेयर एसोसियेशन" द्वारा होम्योपैथिक दवाईयाँ हमारी आवश्यकता के अनुसार मिल रही हैं।
- श्री विजय सहगल जी की "सहगल केमिस्ट" द्वारा आयुर्वेदिक व एलोपैथिक दवाईयाँ हमारी आवश्यकतानुसार उपलब्ध हो रही हैं।
- अल्प आय वर्ग के परिवारों के बच्चे जो आर्यसमाज से जुड़े हुए है उन की शिक्षा, शारीरिक व मानसिक विकास के लिये व मनोरंजन हेतु समय-समय पर विभिन्न व्यक्तिओं का विशेष सहयोग रहा जिनमें श्री विनय चोपड़ा, श्री संदीप दुग्गल, श्री संजीव सेतिया, श्री सचिन ग्रोवर, डा० जावा, वीनू करवाल का विशेष सहयोग रहा। डा० जावा व डा० वानी कपूर ने इन बच्चों की आंखों व दांतो की जांच करवाकर आवश्यक सहायता भी की है।

- श्री रमेश गुप्ता जी ने अपने पिताजी श्री मुंशीराम गुप्ता जी की स्मृति में चार कम्प्यूटर उपलब्ध कराकर समाज के बच्चों की कम्प्यूटर की शिक्षा की व्यवस्था कराई।
- श्री डी० के वर्मा जी के सहयोग से एक 65 इन्च का एल ई डी टी वी प्राप्त हुआ जो बच्चों की शिक्षा और मनोरजंन के लिये इस्तेमाल हो रहा है।
- श्रीमती अर्चना गक्खण द्वारा ऐ जी एम एस फाउन्डेशन जो कि एक समाज सेवी संस्था है, के सहयोग से हमारी सिलाई केन्द्र की तीन महिलाओं को एक-एक नई सिंगर सिलाई मशीन उपलब्ध कराई।
- श्री राजेश वधवा जी का स्वामी श्रद्धानन्द वाटिका के सुन्दरीकरण करने और वाटिका में घूमने वालो की सुविधा के लिये बारिश व धूप से बचने के लिए एक झोपड़ी का निर्माण कराया।

आर्य समाज नारायणा विहार की कार्यकारिणी इन सभी महानुभावों/संस्थाओं के प्रति आभार प्रकट करती है।

निवेदन

- बढ़ती हुई महँगाई को देखते हुए सदस्यों से निवेदन है कि वे अपनी मासिक शुल्क की राशि में कुछ वृद्धि करें और सदस्यता बढ़ाने में सहयोग करें।
- अल्प आय वर्ग के परिवारों के समाज से जुड़े बच्चों के विकास में अपना सहयोग करें।
- आर्य समाज के "बाल विकास फंड" में धन राशि द्वारा बच्चो की शिक्षा में आवश्यक वस्तुएँ जैसे कापी, पेन्सिल, बालपैन, स्कूल बैग, पानी की बोतल वगैरह उपलब्ध कराएं।
- अगर आप पढ़ा सकते है और आप के पास इस के लिए समय है तो यह अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। कक्षा 12वीं तक के बच्चे समाज में आ रहे हैं। साईंस, गणित, अंग्रेजी, कम्प्यूटर आदि के लिए ट्यूटर की आवश्यकता है। अगर आप सप्ताह में 1 या 2 दिन अथवा 1 या 2 घंटे का समय भी दे तो यह मूल्यवान योगदान होगा।
- आप अपने बच्चों के जन्मदिन या अन्य शुभ अवसरों पर समाज के इन बच्चो को मिठाई या उपहार अपने बच्चों द्वारा दिलवाये तो आप के बच्चों में उदारता व दान की प्रवृति बनेगी और ये बच्चे अपने आप को समाज के परिवार का अंग महसूस करेंगे और इन का आत्मबल बढ़ेगा।

आपके निरंन्तर सहयोग से ही आर्य समाज की गतिविधियाँ चल रही हैं।

-सतीश कामरा, प्रधान
आर्य समाज, नारायणा विहार

अनमोल वचन

1. अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।
2. मनुष्य की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका मनोबल है।
3. सारी दुनिया से जीतने वाला अपनी औलाद के सामने हार जाता है।
4. अभिमानी मनुष्य सभी का द्वेषपात्र बन जाता है।
5. अहंकार विनय का विनाश करता है।
6. क्रोध प्रीति का नाशक है।

गीता और गुरुग्रन्थ साहिब में वेदों की महिमा

वेदों का सृजन सर्वशक्तिमान परमपिता परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में ही किया था। यह हमारे ऋषियों का सर्वसम्मत मत हैं। छह दर्शन शास्त्रों का भी यही कथन है कि सर्वशक्तिमान परमात्मा ने मानव रचना के आदिमूल में वेदों का प्रादुर्भाव किया। वेद का शाब्दिक अर्थ है ज्ञान। परमपिता परमात्मा ने मानव मात्र की भलाई के लिए वेदों के माध्यम से शाश्वत सत्य को उजागर किया है।

यूं तो वेदों का वर्णन मनु स्मृति, न्याय शास्त्र, मुण्डक उपनिषद तथा अन्य स्मृतियों मे मिलता है, गीता तथा गुरूग्रंथ साहिब मे वेदों का वर्णन इस प्रकार हुआ है।

गीता में वेदों की महिमा

अन्नाद्भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।
कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि, ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्।।

(गीता - 3/14-15)

संपूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मो से उत्पन्न होने वाला है। कर्म-समुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही यज्ञ में प्रतिष्ठित है।

ओम तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा।।

(गीता 17/23)

ओम तत् सत् - ऐसे यह तीन प्रकार का सच्चिदानन्द घन ब्रह्म का नाम कहा है, उसी से सृष्टि के आदिकाल में ब्राह्मण और वेद तथा यज्ञादि रचे गये।

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो-
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो-
वेदान्त कृद्वेदविदेव चाहम्। (गीता- 15/15)

मैं ही सब प्राणियों के हृदय में अन्तर्यामी रूप से स्थित हूँ तथा मुझसे ही स्मृति, ज्ञान और अपोहन होता है और सब वेदों द्वारा मैं ही जानने के योग्य हूँ तथा वेदान्त का कर्ता और वेदों को जानने वाला मैं ही हूँ।

इन के अतिरिक्त गीता के कई अन्य शलोकों में भी वेदों का वर्णन हुआ है।

गुरूग्रन्थ साहिब में वेदों की महिमा

- ओंकार वेद निरमाये।। गुरूग्रन्थ महल १ ओंकार शब्द।

  प्रभु ने वेदों को बनाया अथवा प्रगट किया।
- हरि आज्ञा होए वेद, पाप पुन्नविचारिया।। महल ५ शब्द १

  परमात्मा की आज्ञा से वेदों का प्रादुर्भाव हुआ ताकि मानव पापों और गुणों में भेद जान सके।
- सामवेद ऋग जजुर अथर्वण,
  ब्रह्म मुख मा इया है त्रैगुरा।
  ताकी कीमत कीत कह न सकै,
  कौतिउ बोले जिउ बोलाइदा।।

  सामवेद, ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा अथर्ववेद

परमात्मा ने प्रगट किए है। इन के महत्त्व का मूल्यांकन कोई नही कर सकता। ये अपरिमित एवं शाशवत हैं।

- ओंकार उत्पति। चार वेद चार खाणी।। महला ५ शब्द १५

  चार वेद परमात्मा के दिए चार खजाने हैं।

- वेद बखान कहहि इक कहिये, आहे बे अन्त किन लडिये: बसन्त अष्टपदियां महला १ अ.३

  कोई पवित्र वेदों का किस तरह बखान कर सकता है? ये परिपूर्ण है। कोई इन का पारावार नही पा सकता।

- दीवा तले अन्धेरा जाई, वेद पाढ मति पापा लाई।। जैसे दिए तले अंधेरा नही रह सकता, उसी प्रकार वेदों के ज्ञान से मन के सभी बुरे विचार नष्ट हो जाते हैं।

- असंख ग्रन्थ मुखि वेद पाढ।।

  संसार में असंख्य ग्रंथ है। वेदों का पाठ करने की प्रथम वरियता है।

महर्षि देव दयानन्द सरस्वती जी ने वेदों का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना सभी आर्यों का परम धर्म कहा है। इसीलिए-

हो सदा आरूढ निज कर्तव्य पर,
पूज्य ऋषि का ऋण चुकाना चाहिये।
वेद के अनुकूल ही हे आर्यों,
आचरण अपना बनाना चाहिए।

-दर्शन लाल कत्याल
नारायणा विहार

सद्विचार

1. आप अपनी जिन्दगी की तुलना अन्य लोगों के साथ मत करें, सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही चमकते है लेकिन अपने-अपने समय पर।
2. अगर कोई व्यक्ति आपसे जलता है तो वह उसकी बुरी आदत नही है बल्कि यह आपकी योग्यता है जो उसे यह काम करने पर मजबूर करती है।
3. किसी की शवयात्रा में जाओं तो यह मत समझना कि आप उसे उसकी मंजिल पर ले जा रहें हैं बल्कि यह समझना कि अर्थी पर लेटा इंसान मुर्दा होकर भी तुम्हें तुम्हारी मंजिल दिखाने ले जा रहा है।
4. व्यक्ति घर बदलता है, लिबास बदलता है, रिश्ते बदलता है, दोस्त बदलता है फिर भी वह परेशान क्यों? क्योंकि वह खुद को नहीं बदलता।
5. अपना दर्द सबको न बताएं मरहम एकाध घर में होता है, नमक घर-घर में होता है।
6. वहम था कि सारा बाग अपना है, तुफान के बाद पता चला सूखे पत्तों पर भी हक हवाओं का है।
7. आईना कब, किसको सच बता पाया है,
जब देखा बायां तो दायां ही नजर आया है।
8. अगर किसी बच्चे को उपहार न दिया जाए तो वह कुछ समय ही रोएगा मगर संस्कार न दिए जाए तो जीवन भर रोएगा।
9. कामयाबी के दरवाजे उन्हीं के लिए खुलते है जो उन्हें खोलने के लिए खटखटाया करते हैं।

दोहे

अपना अपना क्या कहे, कोऊ ना अपना होय,
कर्म सत्य संकल्प है, बाकी सपना होय।
मानुष तन अनमोल है, बिरथा नाहीं जाय,
काम क्रोध मद लोभ में, काहे जनम गवांय।
आये थे किस काम को, करन लगे क्या कार्य,
आस-पास की प्यास में, हीरा जनम लुटाय।
खाय खाय सोवत रहे, पुनि पुनि उठ उठ खाय,
खावन सोवन के सिवा, अब तक क्या करि पाय।
बीत गई कितनी घड़ी, कितनी बाकी होय,
मेरा मेरा कहि मरा, मेरा कित कछु होय।
तेरा तेरा सब तेरा, तन मन धन सब तोय,
अरपन सब प्रभु आपको, मेरा कछुक ना होय।
बांधे मुठ्ठी आए थे, खाली हाथ ही जाएं,
राजा रंक सभी वहाँ, सम-पंगत हो जायें।
तन की सुध हो गई बहुत अब मन सुधि में लाएं,
ऊँचे यदि उद्देश्य हों, सत्कर्म वही कहलाएं।
देह गेह में नेह तज मन में अलख जगाएं,
हंसते हंसते रे मना, भव सागर तर जाएं।

-सत्या तिपाठी

एच-95, नारायणा विहार

आह्वायक का अर्थ

"आह्वायक" संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है-संदेश देने वाला। इसे मानक हिन्दी में "आह्‌वायक" के रूप में लिखा जाएगा। इस शब्द से मिलता जुलता एक शब्द "आवाहक" है जिसका अर्थ है-आवाहन करने या बुलाने वाला।

मकड़ी का जाल

एक दिन एक मकड़ी ने,
अपने तन्तुओ से,
ज्ञान-विज्ञान से,
एक जाल का निर्माण किया।
ताकि, छोटे-छोटे प्राणी,
जाल में फँस जाएं,
और मर जाएं।
परन्तु, एक दिन वही मकड़ी, मर गई,
स्वयं फंसकर, अपने ही जाल में।

-करण सिंह तँवर, मंत्री

अनमोल वचन

1. प्रत्येक अच्छा कार्य पहले असंभव लगता है।
2. जो तकलीफ खुद बर्दाश्त नहीं कर सकते,वह किसी दूसरे को मत दो।
3. जो आपकी खुशी के लिए हार मान लेता है, आप उससे कभी जीत नहीं सकते।
4. जो लोग आपसे जलते है उन लोगों से नफरत मत करना क्योंकि यही वे लोग हैं जो यह समझते हैं कि आप उनसे बेहतर है।
5. समाज में शीघ्र बदलाव क्यों नही आता? क्योंकि गरीब में हिम्मत नही, मध्यवर्ग में फुर्सत नहीं और अमीर को जरूरत नहीं।